अंक : 4

वर्ष : 4

मध्य रेल
सोलापुर मंडल

सोलापुर दर्पण

संजीव मित्तल भा.रे.अ.से.
SANJEEV MITTAL I.R.S.E.

सत्यमेव जयते

महाप्रबंधक
General Manager
मध्य रेल, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस,
मुंबई - 400 001.
CENTRAL RAILWAY
CHHATRAPATI SHIVAJI MAHARAJ TERMINUS,
MUMBAI - 400 001
Phone : 91-22-2262-1230
Fax : 91-22-2262-4555
Email : gm@cr.railnet.gov.in

संदेश

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि सोलापुर मंडल पर राजभाषा पत्रिका सोलापुर दर्पण – अंक 04 का प्रकाशन किया जा रहा है। इस राजभाषा पत्रिका में न केवल मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक रचनाओं को स्थान दिया गया है, बल्कि मंडल के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों की जानकारी को भी प्रस्तुत की गई है।

सोलापुर मंडल का विस्तार " ख " क्षेत्र अर्थात महाराष्ट्र एवं " ग " क्षेत्र अर्थात कर्नाटक तक है। हिंदी, मराठी एवं कन्नड भाषाओं की मिश्रित संस्कृति वाला यह मंडल सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में अग्रणी है। इस मंडल पर अनेक हिंदीतर भाषी कर्मचारी कार्यरत हैं, लेकिन हिंदी के प्रयोग-प्रसार में किसी भी तरह की बाधा नहीं है।

मैं उन सभी रेलकर्मियों को बधाई देता हूं जिन्होंने अपने साहित्यिक योगदान से इस पत्रिका के प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त किया है। गृह पत्रिकाओं के माध्यम से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में रचनात्मक सहायता मिलती है और यही इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य भी है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

संजीव मित्तल
महाप्रबंधक

एस. पी. वावरे भारेइसे
प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

S. P. VAVRE IRSEE
PRINCIPAL CHIEF ELECTRICAL ENGINEER &
MUKHYA RAJBHASHA ADHIKARI

सत्यमेव जयते

मध्य रेल
महाप्रबंधक कार्यालय,
छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस,
मुंबई - 400001
Central Railway
GENERAL MANAGER's OFFICE,
CHHATRAPATI SHIVAJI MAHARAJ TERMINUS,
MUMBAI - 400001

संदेश

सोलापुर मंडल की गृह पत्रिका " सोलापुर दर्पण - अंक 04 " के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। सोलापुर मंडल राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सदैव अग्रणी रहा है, परंतु यह संदेश दूर-दूर तक पहुंचाने में गृह पत्रिका ने अहम भूमिका निभाई है। यह पत्रिका अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों को साहित्यिक मंच भी उपलब्ध कराती है जिससे उनकी रचनात्मक प्रतिभा को निखरने का एक सुनहरा अवसर भी मिलता है।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूं जिनके कारण पत्रिका का निरंतर सफल प्रकाशन हो रहा है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देने में सफल रहेगी।

पत्रिका की सफलता के लिए हमारी शुभकामनाएं।

एस.पी. वावरे
मुख्य राजभाषा अधिकारी

शैलेश गुप्ता आई.आर.एस.एस.ई.
मंडल रेल प्रबंधक
Shailesh Gupta, IRSSE
Divisional Railway Manager

सत्यमेव जयते

मध्य रेल, सोलापुर मंडल
Central Railway Solapur Division

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि सोलापुर मंडल की राजभाषा गृह पत्रिका "सोलापुर दर्पण" के अंक 04 का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी हमारे देश में सर्वाधिक लोकप्रिय व बोली जाने वाली भाषा होने के साथ-साथ हमारी राजभाषा भी है, इसलिए हमारा यह परम कर्तव्य बनता है कि राजभाषा नीति के अनुरूप कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा के प्रयोग में वृद्धि करना सुनिश्चित किया जाए। दैनिक कार्यालयीन कार्यों में सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा सरल हिंदी का प्रयोग करके हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे सकते हैं।

हमें हिंदी को सरकारी उपयोग के साथ व्यवसाय की भाषा भी बनानी चाहिए क्योंकि हमारी व्यावसायिक गतिविधियां आम लोगों से भी जुड़ी हैं और उन्हें उनकी समझ की भाषा में सेवा देकर रेलवे अर्जन में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकते हैं।

मुझे आशा है मंडल पर सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने कार्यालय में अपना दैनिक कामकाज अधिकाधिक राजभाषा हिंदी में करते हुए राजभाषा की प्रगति को उच्च स्तर पर पहुंचाने में सार्थक भूमिका बनाए रखेंगे।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाओं सहित।

शैलेश गुप्ता
मंडल रेल प्रबंधक

वी. के. नागर
(आई.आर.एस.ई.ई.)
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
V. K. Nagar
(I.R.S.E.E)
Additional Divisional Railway Manager
& Apar Mukhya Rajbhasha Adhikari

सत्यमेव जयते

मध्य रेल
सोलापुर मंडल
CENTRAL RAILWAY
SOLAPUR DIVISION
Rly : (O)-14/55002
BSNL : (O)-0217/2312754
Cell : 7219614001
Fax : 0217-2312270
e-mail : adrm@sur.railnet.gov.in

संदेश

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि सोलापुर मंडल की गृह पत्रिका "सोलापुर दर्पण" का अंक 04 प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी में मूल रूप से लेखन की वृति को जगाना तथा इसे प्रोत्साहित करना है।

सोलापुर दर्पण-अंक 04 पत्रिका में राजभाषा की गतिविधियों के साथ- साथ रचनाएं/लेख आदि भी प्रकाशित किए गए हैं इससे रेल अधिकारियों और कर्मचारियों में लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलेगा । इससे कर्मचारियों का राजभाषा में कार्य करने के प्रति उत्साह बढ़ेगा। यह उल्लेखनीय है कि हिंदी में काम करना बहुत सरल है। हमारे सभी कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने के लिए यूनिकोड हिंदी फोंट और अंग्रेजी में टाइप कर हिंदी में आउटपुट प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है।

मुझे आशा है आप दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए मंडल को राजभाषा के क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में रखने में योगदान देगें।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

Nagar

वी.के.नागर
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

विपिन पवार भा.र.से
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
VIPIN PAWAR IRS
DEPUTY GENERAL MANAGER (OL)

सत्यमेव जयते
भारत सरकार Govt. of India
रेल मंत्रालय Ministry of Railways

मध्य रेल
महाप्रबंधक कार्यालय,
छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस,
मुंबई - 400 001
CENTRAL RAILWAY
General Manager's Office
Chhatrapati Shivaji Maharaj Terminus
Mumbai - 400 001

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सोलापुर मंडल द्वारा गृह पत्रिका "सोलापुर दर्पण" के अंक 04 प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिकाएं समाज का आईना होती है। सोलापुर मंडल पर गृह पत्रिका का प्रतिवर्ष प्रकाशन होता है, जिसके लिए मैं पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं। पत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग- प्रसार के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार किया जाना है।

सोलापुर दर्पण अंक 04 में राजभाषा की गतिविधियों और उपलब्धियों के साथ –साथ रेल अधिकारियों और कर्मचारियों की रचानाएं/लेख आदि का भी समावेश किया गया है जिससे अधिकारियों और कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा मिलेगा। आशा है कि इसका प्रकाशन प्रतिवर्ष नियमित रूप से होता रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

विपिन पवार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

एच.वी.सुमंत
H.V.Sumant
राजभाषा अधिकारी,
सोलापुर
Hindi Officer,
Solapur

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
Office Of Divisional Railway Manager
मध्य रेल,सोलापुर-413001
Central Railway,Solapur-413001

संपादकीय

सोलापुर मंडल की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "सोलापुर दर्पण" का अंक 04 पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में रचनाकारों ने अपनी भावनाओं को लेखन के माध्यम से विविध विधाओं में सहेजने की कोशिश की है।

पत्रिका के प्रकाशन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा और रेल कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को और गति मिलेगी । मुझे विश्वास है कि आप राजभाषा हिंदी को अपने नियमित कामकाज की भाषा बनाएंगे और राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देंगे। आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

एच. वी. सुमंत
राजभाषा अधिकारी

सोलापुर दर्पण

मध्य रेल, सोलापुर मंडल अंक-04

इस अंक में

—• संरक्षक •—
शैलेश गुप्ता
मंडल रेल प्रबंधक

—• मार्गदर्शक •—
विमल किशोर नागर
अपर मंडल रेल प्रबंधक
एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

—• संपादक •—
एच.वी.सुमंत
राजभाषा अधिकारी

—• सहयोग •—
वी.बी.काडगे
वरिष्ठ अनुवादक
एम.ए.शेख
वरिष्ठ अनुवादक
आर.बी.साहु
कनिष्ठ अनुवादक
आर.टी.वलिवकर
कनिष्ठ अनुवादक
जे.एन.दीक्षित
मुख्य टंकक

—• पता •—
मंडल रेल प्रबंधक
कार्यालय, राजभाषा
विभाग, मध्य रेल,
सोलापुर-413001
रेलवे फोन 014-55030

क्र.सं.	रचनाओं/लेखों का शीर्षक	रचनाकार/लेखक का नाम सर्व श्री	पृष्ठ सं.
1.	सोलापुर मंडल पर राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किये गए विशेष कार्य	संकलन राजभाषा विभाग	1
2.	स्त्री	अर्चना विलास कुलकर्णी	3
3.	सोलापुर मंडल पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थान	मुश्ताक शेख	4
4.	हिंदी भाषा का महत्व	वी.बी.काडगे	8
5.	तुम कौन हो?	आनंद राज	9
6.	गुगल ट्रांसलेट मोबाइल ऐप की खासियत	जे.एन.दीक्षित	10
7.	जल संरक्षण	एच.वी.सुमंत	12
8.	बुआजी	अजय कुमार शर्मा	13
9.	हिंदी नाटक एक परिचय	राजीव टी.वलिवकर	16
10.	पथ पे विकास के उन्मुक्त देश चाहिए	सुरेन्द्र सिंह बारहट	19
11.	आधुनिक टेकनालॉजी	राजेश कुमार बी.साहु	20
12.	सोलापुर स्टेशन	गजानन्द मीणा	22
13.	मौसमी बुखार (वायरल फीवर)	पांडुरंग शिंदे	29
14.	ईडली डोसा	अर्चना वी.कुलकर्णी	30
15.	है स्वाभिमान	दुर्गा कुमार	31
16.	मेरा गांव	राजेशकुमार बी. साहू	31
17.	इंसानियत का धर्म	सुरेश कुमार रतमेले	32
18.	मजदूर दिवस	संतोष कुमार शर्मा	33
19.	सार्वजनिक स्थान और गंदगी	हंसराज मीना	34
20.	हसावं आपण	प्रफुल्ल सज्जन	35
21.	मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं	अर्जून बी.वाले	36
22.	निष्पर्ण वृक्ष	संतोष कुमार	37
23.	मन	राजेश कुमार बांसीवाल	37
24.	मेहमान	श्रीमती जयश्री पालवे	38
25.	बफे की दावत	एस.एल.कांबले	39
26.	सोलापुर मंडल का इतिहास	संकलन राजभाषा विभाग	40
27.	राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम 1976	संकलन राजभाषा विभाग	41
28.	आंखे भर आयीं	जे. एन. दीक्षित	45
29.	राजभाषा प्रश्नोंत्तरी	संकलन राजभाषा विभाग	46

इस अंक मे प्रकाशित रचनाओं में लेखकों और कवियों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार अथवा रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाएं।
रचना तथा तथ्यों की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं ।

सोलापुर मंडल पर राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए गए विशेष कार्य

राजभाषा के प्रयोग–प्रसार की दृष्टि से सोलापुर मंडल की स्थिति मध्य रेल के अन्य मंडलों की तुलना में कुछ हद तक भिन्न है। यह मंडल दक्षिण मध्य रेलवे तथा दक्षिण पश्चिम रेलवे का सीमावर्ती मंडल है और लगभग ग्यारह वर्ष तक दक्षिण मध्य रेलवे का हिस्सा रह चुका है। भाषा की दृष्टि से भी इस मंडल का अधिकतम भाग "ख" क्षेत्र में है और कुछ हिस्सा "ग" क्षेत्र में भी है । सोलापुर मंडल मराठी,कन्नड,तेलुगु और उर्दू भाषियों का संगम स्थल है। सोलापुर मंडल ने वर्ष 2012, 2013, 2014, 2015 और 2016 के लिए महाप्रबंधक की राजभाषा शील्ड जीतने का गौरव प्राप्त किया है। विशेष उल्लेखनीय है कि 13 जुलाई, 2005 को रेलवे बोर्ड कार्यालय में सोलापुर मंडल को हिंदी के सर्वाधिक और प्रशंसनीय कार्य के लिए रेल मंत्री स्तर पर दी जाने वाली आचार्य महावीर प्रसाद चल वैजयंती प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है। मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय ने राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में वर्ष 2015, 2016, 2017 और 2018 के लिए लगातार चार बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोलापुर की प्रथम पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड जीतकर विजेता बनने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

मंडल रेल प्रबंधक और अपर मंडल रेल प्रबंधक के मार्गदर्शन और मंडल के सभी अधिकारियों तथा समस्त कर्मचारियों के सहयोग से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में निम्नलिखित कार्य को सफलतापूर्वक क्रियान्ववित करने का प्रयास किया है: -

- मंडल की वेबसाइट हिंदी-अंग्रेजी दोंनो भाषा में अद्यतन की गई है। यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है।
- गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार सभी मदों के लिए निर्धारित लक्ष्य को हासिल किया गया है।
- कार्यालयीन कामकाज राजभाषा में करने के लिए राजभाषा विभाग के कर्मचारियों को प्रतिदिन टेबल ट्रेनिंग के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- सभी शाखाओं में गहन अभियान के अंतर्गत उपलब्ध रजिस्टरों / फाइलों पर शीर्ष हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषा में लिखना सुनिश्चित किया गया है।
- मंडल कार्यालय और सभी महत्वपूर्ण स्टेशनों पर हिंदी सुविचार और अंग्रेजी –हिंदी शब्द लिखना प्रारंभ किया गया है।
- कार्यालय में राजभाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना प्रारंभ करें।" इस आशय के स्टीकर्स वितरित किए गए।
- मंडल प्रशिक्षण केंद्र, दौंड और मंडल इंजीनियरी प्रशिक्षण केंद्र, सोलापुर में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सामग्री हिंदी में तैयार करते हुए कर्मचारियों को आरंभिक और सेवाकालीन प्रशिक्षण हिंदी में दिया जा रहा है।
- कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य बढ़ाने के उद्देश्य से सभी कंप्यूटरों को हिंदी यूनिकोड फोंट सक्रिय किया गया है।

- कंप्यूटर प्रयोक्ताओं को कंप्यूटर पर हिंदी में आसानी से टाइप करने के लिए स्पीच टू टेक्स्ट व्हॉइस टाइपिंग, कंप्यूटर टाइपिंग, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद आदि का कार्यशाला, सेमिनार के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए अंग्रेजी पत्रों के हिंदी में टेम्पलेट उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
- संरक्षा परिपत्र, परिचालन परिपत्र हिंदी-अंग्रेजी में प्रकाशित कर वितरित किए जा रहे हैं।
- सिगनल व दूर संचार विभाग और यांत्रिक विभाग के तकनीकी अनुदेश द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं।
- मंडल के सभी स्टेशनों के स्टेशन संचालन नियम हिंदी-अंग्रेजी में अद्यतन किए जा रहे हैं।
- मंडल के सभी समपार फाटकों के फाटक संचालन नियम नियमानुसार त्रिभाषा में प्रकाशित कए जा रहे हैं।
- सभी समारोह, कार्यक्रमों और सेमिनारों का पत्राचार तथा संचलन हिंदी में किया जा रहा हैं।
- सभी स्टेशनों पर यात्री/जनता से संबंधित सूचनाएं नियमानुसार त्रिभाषा में प्रदर्शित की गई हैं।
- मंडल के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर हिंदी साहित्यकारों की सुक्तियों के बोर्ड प्रदर्शित किए गए हैं।
- मंडल के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर राजभाषा का प्रयोग-प्रसार बढ़ाने के उद्देश्य से राजभाषा प्रश्नमंच का आयोजन करते हुए नकद पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं।
- मंडल पर उपलब्ध सभी 08 हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालयों को प्रसिद्ध साहित्यकारों के नाम से नामांकरण किया गया है और साहित्यकारों का परिचय भी प्रदर्शित किया गया है। इन पुस्तकालयों में पाठकों के लिए सभी विधाओं की किताबें उपलब्ध करायी गई हैं।
- मंडल पर हिंदी साहित्यकारों की जयंतियों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है और इस अवसर पर पाठकों में हिंदी वाचन को बढ़ावा देने के लिए पाठक मंच की बैठकों का आयोजन किया जा रहा हैं।
- वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिंदी कार्यशालाओं का नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है।
- मंडल पर गठित सभी 9 राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता हैं।
- मंडल के दौंड स्टेशन पर डिजिटल हिंदी सुविचार बोर्ड का शुभारंभ किया गया है।
- मंडल की त्रैमासिक राजभाषा ई-पत्रिका संदेश का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में सभी विभागों की गतिविधियां प्रकाशित की जा रही है।
- अधिकारियों और कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए मंडल की वार्षिक गृह पत्रिका सोलापुर दर्पण का नियमित प्रकाशन किया जाता है।
- मंडल पर हिंदी दिवस के अवसर पर

राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

- मंडल पर गृह मंत्रालय की 20 हजार शब्दोंवाली पुरस्कार योजना को क्रियान्वित करते हुए वर्ष 2019 में इस योजना के अंतर्गत 290 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

इस प्रकार मंडल पर राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के प्रयास निरंतर जारी है।

****

संकलन राजभाषा विभाग

स्त्री

झाशी ची तलवार ही तू
शिवबाचा आधार ही तू
मातृत्वाच्या ओढी मधला
अमर हिरकणी गड ही तू

संगीतातला सुर ही तू
अवकाशातील झेप ही तू
पण तानुकल्याच्या झोपे मधला
गोड मायेचा पदर ही तू

अगं सौंदर्याचा ध्यास ही तू
मोगऱ्यातला वास ही तू
तुळशी समोर लुकलुकणारा
शांत प्रसन्न दिवा ही तू

पण अजून कधी का कोठे तरी
होणारी भ्रूणहत्या तू
कोमलत्वाचा बलात्कार तू
पुरुषार्थ शी झगडणारा
शांत मनाचा आक्रोश तू

पण हे कधी तू विसरु नकोस
रक्त वाहणारे तुझ्यातले
पेटून उठता सूर्य ही फिका पडे

क्षितिजा पल्याड फडफडणारा
मुक्त मनाचा आनंद तू.....

अर्चना विलास कुलकर्णी
डी.ई.ओ. सिगनल एवं दूरसंचार विभाग,
सोलापुर

सोलापुर मंडल पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थान

श्री सिद्धेश्वर मंदिर, सोलापुर

श्री सिद्धेश्वर सोलापुर शहर के ग्राम देवता हैं। यह मंदिर शहर के मध्य में स्थित है। मंदिर के तीनों ओर खूबसुरत झीलें हैं और मंदिर एक द्वीप की तरह दिखता है। श्री सिद्धेश्वर का संक्षिप्त में इतिहास इस प्रकार है:- 12 वीं शताब्दी में, सोलापुर शहर में श्री सिद्धाराम एक महान संत थे। उन्होंने श्री बसवेश्वरा की शिक्षा और उपदेश का प्रसार किया। श्री सिद्धाराम की शिक्षाओं और उपदेशों से प्रेरित होकर, एक युवा कुम्हार की बेटी ने उससे शादी करने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन श्री सिद्धाराम ने ब्रह्मचारी होने के नाते, शादी से इनकार कर दिया और उस लडकी को योगदंड से शादी करने के लिए कहा। यह प्रतीकात्मक विवाह समारोह हर साल सिद्धार्थ यात्रा के दौरान मकर संक्रांति के दौरान भोगी, संक्रांति और किंक्रांति के तीन दिनों के दौरान मनाया जाता है। शादी के लिए नंदी ध्वज को प्रतीकात्मक दुल्हन और दूल्हे के रूप में माना जाता है। यह समारोह आमतौर पर हर साल 14 जनवरी के आसपास आयोजित किया जाता है। इस अवधि के दौरान, 15 दिनों के लिए सिद्धेश्वर मेले का आयोजन किया जाता है। सिद्धेश्वर मेले को स्थानीय जनता द्वारा गड्डा जत्रा के नाम से जानती है। श्री सिद्धेश्वर मंदीर सोलापुर रेलवे स्टेशन से लगभग 01 कि.मी. की दूरी पर है।

श्री भगवंत मंदिर, बारसी

बारसी शहर, श्री भगवंत के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। भगवंत मंदिर श्री विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर की

खासियत यह है कि यह भारत का एकमात्र मंदिर है जिसे श्री विष्णु भगवंत के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर वर्ष 1245 में हेमाडपंथी की शैली में बनाया गया था। मंदिर में चार दिशाओं में चार प्रवेश द्वार हैं लेकिन मुख्य द्वार पूर्व दिशा में है। गर्भ गृह के सामने एक गरूड खंबा है। श्री भगवंत की मूर्ति काले पत्थर की है और भगवंत के हाथों में शंख, चक्र और गदा हैं। राजा अंबरीश की मूर्ति भगवान के दाहिने हाथ में है। भगवान के पीछे श्री लक्ष्मी विराजमान हैं। शिवलिंग भगवान के माथे पर है और छाती पर दाढ़ी वाले भालू के पैरों के निशान हैं।

मंदिर के लिए नानासाहेब पेशवा की ओर से सन 1760, ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से सन 1823 में और ब्रिटिश सरकार द्वारा सन 1774 में इनाम दिए जाने की जानकारी उपलब्ध है। मंदिर का रखरखाव पंच समिति करती है। मंदिर की नियमित सेवा बडवे द्वारा की जाती है। दैनिक सेवाओं में काकड़ा आरती, नित्य पूजा, महापूजा, शाम में धूपारती और रात में शेजारती शामिल है। आषाढ़ी, कार्तिक, चैत्र और माघी एकादशी को पांडवपुर के यात्रा उत्सव के दौरान बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। आषाढ़ी और कार्तिक एकादशी के दौरान, श्री भगवंत के प्रतिमा को गरुड पर बिठाकर नगर में प्रदक्षिणा की जाती है।

श्री विठ्ठल मंदिर, पंढरपुर

पंढरपुर - यह श्री विठ्ठल और श्री रुक्मिणी का पवित्र स्थान है। पंढरपुर नगरी भारत की दक्षिण काशी और महाराष्ट्र के कुलदैवत के रूप में प्रसिद्ध है। सोलापुर जिला मुख्यालय से 72 किमी की दूरी पर स्थित है। पंढरपुर रेलवे स्टेशन मिरज-कुर्डुवाड़ी-लातूर रेलवे लाइन पर है। श्री वैठ्ठल मंदिर सड़क मार्ग से पंढरपुर रेलवे स्टेशन से लगभग 03 किमी की दूरी पर है।

श्री विठ्ठल का प्राचीन मंदिर वर्ष 1195 में पुनर्निर्मित किया गया था। पंढरपुर शहर में कई हिंदू संतों और कई संतों के मठ (धर्मशालाएं) हैं। पंढरपुर शहर चंद्रभागा (भीमा) नदी के तट पर स्थित है। आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी के अलावा, पंढरपुर में 12 महिने महाराष्ट्र और आसपास के राज्यों से बड़ी संख्या में भक्तों की श्री विठ्ठल और श्री रूक्मिणी के दर्शन के लिए भीड़ लगी रहती है। आषाढी और कार्तिकी में राज्य के विभिन्न स्थानों से संतों की पालखियां आती हैं और वाखरी में इकट्ठा होती हैं।

विट्ठल मंदिर में काकडा आरती, महापूजा, महानैविध्य, पोशाख, धुपारती, पाद्यपूजा, शेजारती सहित विभिन्न प्रथाएं निभाई जाती हैं। मुख्य मंदिर में, नामदेव पायरी दरवाजे से प्रवेश करते हुए पश्चिम द्वार से बाहर निकलते समय कई देव देवताओं का दर्शन होता है।

श्री स्वामी समर्थ महाराज, अक्कलकोट

श्री स्वामी समर्थ महाराज के स्थान के रूप में अक्कलकोट प्रसिद्ध है। यह मंदिर अक्कलकोट रोड रेलवे स्टेशन से लगभग 12.5 किमी की दूरी पर स्थित है। श्री स्वामी समर्थ महाराज को श्री दत्तात्रेय का अवतार माना जाता है।

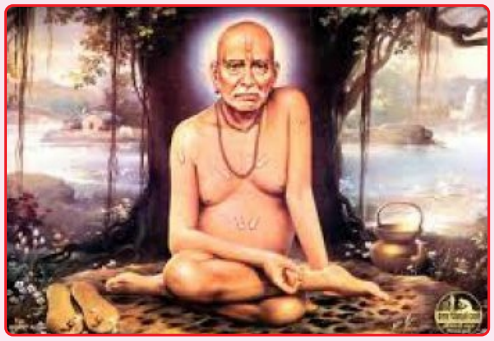

श्री स्वामी समर्थ की समाधि की पूजा भक्त करते हैं। हर साल चैत्र शुद्ध त्रयोदशीपर स्वामी समर्थ की पुण्यतिथि मनाई जाती है। यहां पर राज्य से और इतर राज्यों भक्तगण बड़ी संख्या में नियमित रूप से आते हैं। वर्तमान स्वामी समर्थ मंदिर एक वटवृक्ष के चारों ओर बना हुआ है। उसी वृक्ष के नीचे बैठकर श्री स्वामी समर्थ भक्तों को ध्यान और उपदेश देते थे। मंदिर परिसर में एक मुख्य मंदिर, सभाकक्ष और भक्तों के लिए निवास स्थान है। मंदिर समिति ने अन्नछत्र में हर दोपहर और रात में भक्तों के लिए मुफ्त भोजन (प्रसाद) की व्यवस्था की है।

श्री स्वामी समर्थ महाराज 1779 के दशक की शुरुआत में अक्कलकोट आए। श्री दत्तात्रेय के चौथे अवतार माने जाने वाले श्री स्वामी समर्थ का कुल कार्यकाल 40 वर्ष का है, जिनमें से उन्होंने 21 वर्षों तक अक्कलकोट में निवास किया।श्री स्वामी समर्थ का घोष वाक्य "भिऊ नकोस- मी तुझ्या पाठीशी आहे ", जो भक्तों को संकट के समय साहस और मानसिक शक्ति प्रदान करता है।

श्री कमला देवी, करमाला

श्री कमला देवी के मंदिर के कारण करमाला शहर प्रसिद्ध हो गया है। मध्य रेल के पुणे-सोलापुर मार्ग के जेऊर रेलवे स्टेशन से यह मंदिर लगभग 11 किमी की दूरी पर है। इस मंदिर में 16 इस संख्या का विशेष महत्व है। श्री राव राजे निम्बालकर ने सन 1727 में श्री कमला भवानी का मंदिर बनवाया। श्री कमला देवी के मंदिर को तुलजापुर की तुलजा भवानी की दूसरी पीठ के रूप में जाना जाता है। हेमाडपंती की शैली में निर्मित, इस मंदिर का दक्षिण-पूर्व और उत्तर दिशा में प्रवेश द्वार है। इस मंदिर की खासियत यह है कि मंदिर के सामने वाले कुएं में 16 सीढ़ियां हैं। मंदिर में 16 मीनारें हैं। मंदिर की छत पर 16 चित्र पेंटिंग की हैं। मंदिर में 16 स्तंभ हैं। नवरात्रि को बहुत श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा से चतुर्थी के दौरान वार्षिक यात्रा मनाई जाती है।

मेहर बाबा, अहमदनगर

मेहर बाबा की समाधि अह्मदनगर स्टेशन रेलवे से सड़क मार्ग से 04 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मेहरबाद तीर्थयात्रियों के लिए सभी गतिविधियों का दिल है, क्योंकि मेहर बाबा के शारीरिक शरीर को मेहरबाद पहाड़ी के चोटी पर उनकी "समाधि" में रखा गया है। मेहर बाबा की यह समाधि भारत में महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में स्थित है।

मेहर बाबा एक ईरानी मूल के भारतीय चिंतक और दार्शनिक थे। बाबा न केवल दार्शनिक थे बल्कि इस काल खंड के अंतिम पूर्णावतार हैं। उनकी समाधी मेहेराबाद, अहमदनगर (महाराष्ट्र) में है। शीर्डी के साईं बाबा, बाबाजान पूना, साकोरी के उपासनी महाराज, केडगांव के नारायण महाराज़ एवं नागपुर के ताजुद्दीन बाबा, अवतार मेहेर बाबा के गुरु थे।

मेहर बाबाका मूल नाम मेरवान शेरियार ईरानी था । वे एक भारतीय आध्यात्मिक गुरु थे जिन्होंने दावा किया कि वे एक अवतार थे जिन्हें मानव के रूप में परफेक्ट मास्टर (मेहर बाबा) कहा जाता था।

मेहर बाबा का जन्म 25, फरवरी,1894 में भारत के पूना में ईरानी पारसी माता-पिता के यहां हुआ था। उन्होंने आध्यात्मिक परिवर्तन की शुरुआत 19 साल की उम्र से की थी। इस दौरान उन्होंने अपने मिशन की शुरुआत करने से पहले और 1922 की शुरुआत में 27 साल की उम्र में पांच आध्यात्मिक शिक्षकों से संपर्क किया। बाद में उन्होंने अपने स्वयं के शिष्यों को इकट्ठा करने से पहले 10 जुलाई 1925 से अपने जीवन के अंत तक, मेहर बाबा ने एक वर्णमाला बोर्ड के माध्यम से या हाथ के अनोखे इशारों से संवाद करते हुए चुप्पी बनाए रखी। उन्हों अपना जीवन अपने मंडली (शिष्यों के चक्र) के साथ लंबे समय तक एकांत में बिताया, इस दौरान उन्होंने अक्सर उपवास ही किया। वे अपने जीवनकाल में व्यापक रूप से सार्वजनिक समारोहों का आयोजन करते हुए कोढ़ियों और गरीबों के साथ परोपकार के कामों में लगे रहे। भारत के मेहरबाद में उनकी समाधि (धर्मस्थल / मकबरा) अंतर्राष्ट्रीय तीर्थयात्रा का स्थान बन गया है।

मेहर बाबा ने जीवन के कारण और उद्देश्य पर कई उपदेश दिए, जिनमें पुनर्जन्म की शिक्षा भी शामिल है और यह कि अभूतपूर्व दुनिया एक भ्रम है। उन्होंने सिखाया कि ब्रह्मांड कल्पना है, ईश्वर वास्तव में मौजूद है, प्रत्येक आत्मा वास्तव में ईश्वर है जो व्यक्तिगत रूप से अपनी दिव्यता को महसूस करने के लिए कल्पना से गुजर रहा है। इसके अलावा उन्होंने ईश्वर-प्राप्ति की इच्छा रखने वाले आकांक्षी के लिए व्यावहारिक सलाह दी और इस तरह जन्म और मृत्यु के चक्र से बच गए। उन्होंने परफेक्ट मास्टर्स, अवतार की अवधारणा और आध्यात्मिक पथ के विभिन्न चरणों में उन लोगों के बारे में भी पढ़ाया था। उनकी प्रमुख शिक्षाएं उनकी प्रमुख पुस्तक डिस्कोर्स और गॉड स्पीक्स में दर्ज हैं।उनकी सामान्य अभिव्यक्तियों की शुरूआत जैसे कि "डोन्ट वरी, बी हैप्पी।"

तीर्थयात्री वर्ष के सभी दिनों में प्रातः 6.30 बजे से रात 8 बजे तक, प्रत्येक दिन मेहर बाबा की समाधि के दर्शन कर सकते हैं। "आरती" सुबह 7 बजे और शाम 7 बजे की जाती है, जिसके बाद 30 मिनट के लिए तीर्थयात्रियों द्वारा भजन गाया जाता है।

***

मुश्ताक शेख

वरिष्ठ अनुवादक, सोलापुर

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा देने से अल्पकाल में हो सकता है; उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।

- घनश्याम सिंह

हिंदी भाषा का महत्व

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य का पितामह कहा जाता है। उन्हें कम उम्र मिली, लेकिन उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य पर अमिट छाप छोडी है। भाषा के संदर्भ में उनकी यह सोच आज भी प्रासंगिक लगती है कि 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल '। यह उस दौर की बात है, जब देश में अंग्रेजों का राज था। किसी भी देश की प्रगति में उस देश की भाषा का अमूल्य योगदान होता है। इसके बिना कुछ भी नहीं कर सकते है। यही कारण है कि विश्व में हमेशा मातृभाषा को महत्व दिया जाता है और किसी भी इंटरव्यू में या किसी भी बड़ी सभा में हिस्सा ले रहे हों, तो मातृभाषा के बारे में जरुर पूछा जाता है।

मानव अनंत काल से विकास की यात्रा करता रहा है। इसी क्रम में भाषा का भी विकास होता रहा है। इस क्रम में हिंदी भाषा के पास एक अपना इतिहास रहा है। इसके विकास की कहानी को समझना हो तो हमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट और हिंदी तक की यात्रा करने होगी। संस्कृत भाषा का समय 1500 ई. पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व तक रहा। इस दौर में वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ लिखे गए। इसके बाद पाली भाषा का समय 500 ईसा पूर्व से पहली शताब्दी तक चला और इस दौर में बौध्द ग्रंथों की भरमार है। इसके बाद अपने विकास यात्रा में भाषा का परिचय प्राकृत से हुआ और 1 ईसवी से 500 ईसवी तक इसका प्रभुत्व रहा। इस काल में जैन साहित्य का बोलबाला रहा। इस सफर में हिंदी भाषा से पहले अपभ्रंश भाषा का दौर रहा, जो 500 से 1000 ईसीवी तक चला।

इससे यह तो तय है कि किसी भाषा का निर्माण एक दिन में नहीं होता है। वह अपने स्वरुप को बदलती रहती है। जहां तक अपने देश की बात है, तो कहा जा सकता है कि भाषा के मामले में भी यहां पर विभिन्नता देखने को मिलती है। मुख्य रुप से यहां पर हिंदी और अंग्रेजी को सभी समझते हैं। इस दोनों भाषाओं के साथ अन्य भाषा की समझ रखने वाले इस बात को मानेंगे कि आज से 20 साल पहले और अब के भाषा में बदलाव आएं हैं।

जैसे समय के साथ-साथ हम आधुनिक होते हैं, वैसे इस यात्रा में हमारी भाषा भी आधुनिक हो रही होती है। आज के दौर में हिंदी भाषा ऐप्स और कंप्यूटर की भाषा बन चुकी है। इस नए दौर में इस भाषा के प्रयोग का भी ग्राफ बढ़ा है। हिंदी भाषा अनमोल है। किसी भी भाषा की तुलना किसी दूसरी भाषा से नहीं की जानी चाहिए। साहित्य की भाषा और रोजमर्रा की भाषा में बड़ा अंतर होता है। जैसे कि आज के दौर में लोग सोशल वेबसाइट्स पर हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। वहां पर बहुत सारे अपने अभिव्यक्ति के लिए इसे प्रयोग में ला रहे हैं। बहुत अच्छा लिखा जा रहा है। लेकिन यह साहित्य नहीं है। भाषा के साथ बोली का गहरा रिश्ता होता है। जब हम बोलचाल की भाषा लिखने और पढ़ने में प्रयोग में लाते हैं, तो उसमें बोली की प्रधानता आ जाती है।

अपनी भाषा को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने की जरुरत है। अगर कोई अपनी भाषा का प्रयोग बड़े मंच से करता है, तो यह देश के लिए निश्चित रुप से गर्व से भरा पल होता है। सरकारी संस्थानों में हिंदी का प्रयोग जरुर किया जाता है।

हिंदी भाषा को भारत में सबसे ज्यादा तरजीह देने की जरुरत है। इसकी एक खूबसूरती यह भी है कि यह हर

एक भाषा का सम्मान करती है। यह दूसरी भाषाओं के शब्दों को सहजता के साथ स्वीकार करती रही है। इसमें कोई दो राय नहीं है यह भाषा देश की ताकत बन सकती है ओर इसके आधार पर हम विश्व को अपनी भाषा की क्षमता, उसकी खूबसूरती और उत्कृष्टता से भी परिचय करा सकते हैं। लेकिन इसके लिए जरुरी है कि ज्यादा से ज्यादा इसे प्रयोग में लाएं। विश्व में कई एक देश ऐसे हैं, जो सिर्फ अपनी भाषा में काम करते हैं और हर एक क्षेत्र में अव्वल हैं। हमें भी इस प्रकार से कोशिश करनी चाहिए।

13 सितंबर, 1949 को संविधान सभा की बहस में भाग लेते हुए देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने भी कहा था कि किसी विदेशी भाषा से कोई राष्ट्र महान नहीं हो सकता। कोई भी विदेशी भाषा आम लोगों की भाषा नहीं हो सकती। भारत के हित में, भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के हित में, ऐसा राष्ट्र बनाने के हित में जो अपनी आत्मा को पहचाने, जिसे आत्मविश्वास हो, जो संसार के साथ सहयोग कर सके, हमें हिंदी को अपनाना चाहिए।

वी.बी.काडगे
वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग, सोलापुर

तुम कौन हो?

जिसने मुझे संसार दिया आत्मा से प्यार किया
जिंदगी का उपहार दिया

तुम कौन हो?
जिसकी गोद में आँखे खोला
जिसके दूध ने जीवन तौला
जिसने मुझे जीना सिखाया
जीवन पथ पर चलना सिखाया

तुम कौन हो?
आंचल में जिसकी छाया पाया
पतझड़ में भी हसना सिखाया
तुम मेरी जां हो
निश्चय मेरी ही माँ हो
मेरी प्यारी मां हो

आनंद राज,
कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)

भारतवर्ष के लिए देवनागरी साधारण लिपि हो सकती है और हिन्दी भाषा ही सर्वसाधारण की भाषा होने के उपयुक्त है।

- शारदाचरण मित्र

गूगल ट्रांसलेट मोबाइल ऐप की खासियत

गूगल ट्रांसलेट से हम किसी मैटर को किसी अन्य स्थान से लेकर या टाइप करके उसका हिंदी सहित 12 भारतीय भाषाओं या विश्व की अन्य 104 भाषाओं में अनुवाद करते हैं। गूगल ट्रांसलिटरेशन से हम रेमिंग्टन की-बोर्ड पर अंग्रेजी में टाइप करके देवनागरी का लिप्यंतरण (Transliteration) प्राप्त कर सकते हैं।

मोबाइल के गूगल ट्रांसलेट को अपने मोबाइल में प्लेस्टोर के माध्यम से डाउनलोड करके आप What'sApp , Face Book, SMS या किसी वेबसाइट के किसी भी मैटर को सिर्फ एक टैप (Tap) से किसी भी अन्य भाषा में अनुवाद पा सकते हैं। इसके अलावा आप चार तरीके से भी अंग्रेजी से किसी भाषा में अनुवाद कर सकते हैं:-

1. मैटर टाइप करके
2. किसी मैटर का फोटो क्लिक करके
3. बोलकर
4. हैंडराइटिंग करके

सबसे पहले आप अपने मोबाइल फोन पर प्लेस्टोर के माध्यम से गूगल ट्रांसलेट ऐप डाउनलोड करें। गूगल ट्रांसलेट ऐप डाउनलोड करने के लिए ॲड्रेस-बार में Google Translate टाइप करके सर्च करें। ऐसा करने पर आपको अन्य ऐप के साथ-साथ गूगल का ऑफिसियल ट्रांसलेट ऐप भी दिखाई देगा। इसे इनस्टॉल करने के लिए इसके इमेज को टैप करें। यदि आपके मोबाइल की डाटा स्पीड ठीक-ठीक हैं तो यह एक मिनट की समय सीमा में आपके मोबाइल में डाउनलोड हो जाएगा।

डाउनलोड होने के बाद इसे खोलने के लिए इसकी इमेज पर टैप करें और इसकी सेटिंग को खोलें।सेटिंग में आप देखेंगे कि चार निर्देश दिखाई दे रहे हैं- पहली लाइन में लिखा है Enable, दूसरी में Show notification, तीसरी में Preferred language और चौथी लाइन में Learn more सबसे पहले हमें पहली लाइन में लिखे Enable के आगे बने बटन को सक्रिय कर देना है। सक्रिय करते ही बटन का रंग नीला हो जाएगा। इसके बाद तीसरी लाइन में लिखे Preferred language पर टैप करके पहली भाषा और दूसरी भाषा तय करनी है। सामान्यत: हमें पहली भाषा अंग्रेजी और दूसरी भाषा हिंदी रखनी होती है क्योंकि हमें अंग्रेजी से हिंदी का अनुवाद चाहिए। आप चाहें तो इसके विपरित भी रख सकते हैं यानी पहली भाषा हिंदी और दूसरी भाषा अंग्रेजी।

अब आपका गूगल ट्रांसलेट अंग्रेजी से हिंदी और इसके विपरित भाषा में अनुवाद करने के लिए तैयार हो गया है। जैसाकि ऊपर बताया गया है कि मोबाइल ट्रांसलेशन ऐप मोबाइल में उपलब्ध किसी भी ऐप या साइट के अंग्रेजी भाषा में लिखे टेक्स्ट को सेकेंदों में हिंदी सहित 12 भारतीय भाषाओं या विश्व की अन्य 104 भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध करा देता है। उदाहरण के लिए आप WhatsApp के किसी संदेश को सिलेक्ट करके कॉपी कीजिए। कॉपी करते ही स्क्रीन के ऊपर दायीं ओर गूगल ट्रांसलेट का आइकॉन दिखने लगेगा। इसे टैप (Tap) कीजिए। टैप (Tap) करते ही इसका अनुवाद आपके द्वारा चयनित भाषा में हो जाएगा। इसीतरह आप Face Book या किसी वेबसाइट से काई मैटर भी अनुवाद कर सकते है।

इसके अलावा गूगल ट्रांसलेट के इस ऐप में तीन और काफी महत्वपूर्ण फीचर उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग करना भी आसान है और यह आपकी कार्यक्षमता और अधिक बढ़ा देता है।

पहला महत्वपूर्ण फीचर है- इमेज ट्रांसलेशन। इमेज ट्रांसलेशन ऑन करते ही आपके फोन का कैमरा

जादुई अनुवादक की तरह काम करने लगेगा। डिफॉल्ट में इसकी भाषा अंग्रेजी दी हुई है।आप चाहें तो अपने कैमरे की भाषा बदल सकते हैं। कैमरा के माध्यम से अनुवाद करने के लिए किसी हार्डकॉपी में या कंप्यूटर स्क्रिन या पोस्टर में दी हुई अंग्रेजी सामग्री पर कैमरा फोकस कीजिए और नीचे कैमरा बटन को टैप (Tap) करें। उसके बाद Select All पर टैप करें। टैप करते ही कैमरे फोकस में आई हुई पूरी सामग्री सेलेक्ट हो जाएगी तथा गूगल ट्रांसलेट आइकॉन को टैप करते ही अनुवाद आपके सामने आ जाएगा।

दूसरा महत्वपूर्ण फीचर है- बोलकर अनुवाद (Voice Translation) वॉइस ट्रांसलेशन के लिए इसमें दिए गए माइक आइकॉन को टैप करते हैं। आपके मोबाइल के स्क्रीन पर एक मैसेज Allow Translate to record audio आएगा। इसमें आपसे DENY या ALLOW पूछा जाएगा। आपको ALLOW पर टैप करना है।इसके बाद आप बोलना प्रारंभ कीजिए। गूगल आपके द्वारा बोले गए शब्दों/वाक्यांशों को पहचान कर उसका अनुवाद कर देगा।

तीसरा महत्वपूर्ण फीचर है- हैंडराइटिंग रिकाग्निशन ट्रांसलेशन। यह भी काफी आसान है। मोबाइल फोन के स्क्रीन पर निर्धारित बॉक्स में आप अपनी उंगलियों से किसी शब्द को अंग्रेजी में लिखें। ऐप इसे पहचानने के बाद सही शब्द का विकल्प देगा। आप इसमें से अपने वाले शब्द को चुन लें। जिसका अनुवाद यह ऐप हिंदी बॉक्स में दिखाएगा।

इस मोबाइल ऐप में न्यूरल ट्रांसलेशन प्रणाली होने की वजह से इसके द्वारा किए गए अनुवाद में 90 प्रतिशत तक शुध्दता देखने को मिली है क्योंकि यह मशीनी अनुवाद है, इसमें टेक्स्ट / विषय के संदर्भ को देखते हुए शब्दों का चयन तथा वाक्य में सही अर्थ आने के लिए कुछ संशोधन हमें करना पड़ता है। यह ऐप न केवल अनुवादकों के लिए बल्कि आम लोगों के लिए लाभदायक है। इस ऐप के जरिए हम WhatsApp या Face Book पर मिली सामग्री को अपने मित्रों को उनकी भाषा में परिवर्तित करके भेज सकते हैं और अपने संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ता प्रदान कर सकते हैं।

जे.एन.दीक्षित

मुख्य कार्यालय अधीक्षक (टंकण)

जल संरक्षण

मानव के जीवन में जल का अनन्य साधारण महत्व है। बिना जल हम हमारें दैनिक कार्य बिलकुल ही नहीं कर सकते। सुबह उठते ही ब्रश करने के लिए, नहाने के लिए, कपडे धोने के लिए हमें पानी की आवश्यकता होती है। पिछले कुछ सालों से हमें पानी की कमी महसूस हो रही है। बड़े महानगरों में पानी की समस्या विकराल स्वरुप ले रही है। इसलिए सरकार द्वारा भी जल संरक्षण पर अधिक बल दिया जा रहा हे।

पृथ्वी की सतह लगभग 75 प्रतिशत जल से भरी है। लेकिन इसका 97 प्रतिशत समुद्र का पानी है। केवल 03 प्रतिशत जल ही पीने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका अधिकतर हिस्सा या तो धृवीय हीम के रुप में जम जाता है या मृदा में मिल जाता है। अत: हम जो पानी इस्तेमाल करते है वह पृथ्वी के सतह जल की कुल मात्रा में केवल 0.05 प्रतिशत है।

बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगीकरण के कारण जल प्रदुषित होते जा रहा है। पहले लोग झीलों, नहरों, नदियों, तालाब इत्यादि के पानी का प्रयोग करते थे। लेकिन वर्तमान समय में यहां का पानी प्रदुषीत होने के कारण यह पानी पीने योग्य नहीं बचा है। जल संरक्षण करना यह आज की मुलभूत आवश्यकता बन गई है।

भारत में लगभग सभी स्थानों पर अच्छी वर्षा होती है। वर्षा के दिनों में पानी नदियों में बहकर समुद्र में चला जाता है। समुद्र का पानी हमें पीने के लिए काम में नहीं आता है। गर्मी के दिनों में पानी की समस्या उत्पन्न होने पर हम बोअरिंग करते है और अंधा-धुंद बोअरिंग करने के कारण धरती का जल स्तर दिन-ब-दिन नीचे जा रहा है। यदि हम वर्षा के दिन में हमारें छत का पानी इकठ्ठा करते हुए वह जल पुनरर्भरण के तहत वापस जमीन में छोड़ देते है तो जल स्तर बढ़ेगा और हमें अधिक पानी मिलना संभव होगा। इससे वर्षा के दिनों में लाखों लीटर बेकार जाने वाला पानी गर्मी के दिनों में हमें काम आ सकता है।

जल संरक्षण के लिए हम निम्नलिखित बातें कर सकते हैं।

01. आपको जितनी आवश्यकता हो, उतने ही जल का उपयोग करें।
02. नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद रखें।
03. नहाने के लिए अधिक जल का प्रयोग न करें।
04. सब्जीयां तथा कपडों को धोते समय नलों को खुला न छोडे।
05. सब्जीयां तथा फलों को धोने में उपयोग किए गए जल को फुलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में या फर्श आदि धोने के लिए किया जा सकता है।
06. गाडियां धोते समय नल का प्रयोग न करें। बल्कि बाल्टी में पानी लेकर गाडियां धोंएं।
07. जल की अनावश्यक बरबादी को रोकें।

जल संरक्षण की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति विशेष नहीं है। बल्कि समाज के सभी लोगों की यह जिम्मेदारी है। यदि हम अभी सजग नहीं हुए तो हमारी आने वाली पिढी हमें जिम्मेदार ठहराएगी।

आने वाली भयावह स्थिति को टालने के लिए हम यह प्रण करें कि जिस प्रकार और जितना संभव हों, मैं मेरी ओर से जल संरक्षण का प्रयास करुंगा और अन्य लोगों को इसे करने के लिए प्रोत्साहित करुंगा।

एच. वी. सुमंत

राजभाषा अधिकारी, सोलापुर

भाषा को लेकर विदेशी लोगों का अनुकरण न किया जाय।

- भीमसेन शर्मा

बुआजी

आज सुबह जैसे ही मैं उठा तो घर में अजीब सी खामोशी छाई थी, मैं भागकर बुआजी के कमरे में गया, क्योंकि हर सुबह मैं बुआजी के दर्शन करता था फिर अपने दिनचर्या के कामों की शुरूआत करता था। मैंने जैसे ही बुआ के कमरे के पास पहुंचा तो पाया कि कमरे का दरवाजा खुला है और बारिश की हल्की गीली हवा कमरे से बाहर आ रही है। मैं अंदर गया तो पाया बुआ लेटी हुई है और उनके चेहरे पर एक मुस्कान है, फिर देख खिड़की खुली हुई थी जिसमें से बारिश की ठंढी-ठंढी हवा अंदर आ रही थी साथ ही गुलमोहर के कुछ फूल और पत्ते भी खिड़की से हवा के साथ अंदर आ गए थे जो कमरे के फर्श और बुआ के बिस्तर पर बिखरे पड़े थे।

मैंने आवाज दी रूही बुआ उठो। वैसे तो बुआ का रूटीन था कि वो सुबह पांच बजे उठकर सबसे पहले उनके कमरे की बालकनी में जितने गमले थे उसमें पानी डालना, लेकिन आज सुबह के छ: बज गए थे और बुआ अभी तक सोई थी। मैं घबरा गया और जाकर रूही बुआ को कंधे से पकड़कर जोर से हिलाया, तो भी उनमें कुछ भी हलचल नहीं हुई। मैं और घबरा गया और चिल्लाकर डैडी को आवाज दी। मेरी आवाज सुनकर डैडी-मम्मी और भइया सभी भागकर ऊपर आए। डैडी ने जोर से आवाज दी रूही उठो। लेकिन उनकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। पापा ने सामने जाकर उनकी नब्ज देखी, पाया कि वो बंद हो चुकी थी, रूही बुआ की धड़कन बंद हो चुकी थी और वो अपने इस शांत सी मुस्कराहट के साथ इस दुनिया से चल बसी थी।

पापा ने तुरंत डॉक्टर अंकल को फोन किया। 15 मिनट के बाद डॉक्टर अंकल आए और उन्होंने रूही बुआ को मृत घोषित कर दिया। अचानक पापा फूट-फूट कर रोने लगे। आज पहली बार मैंने पापा को रोते देखा था। मैं अचंभित सा सबके चेहरे देख रहा था, आंखोंसे अविरल आंसू बह रहे थे। घर में सभी रो रहे थे।

थोड़ी देर बाद पापा शांत हुए फिर उन्होंने कुछ दोस्तों एवं रिश्तेदारों को फोन करके इस दुखद घटना की सूचना दी। फिर उनके अंतिम संस्कार की तैयारी में लग गए। मैं एक कोने में खड़ा रूही बुआ के बारे में सोचने लगा और सोचते-सोचते अतीत में चला गया। रूही बुआ ने कई बार उनकी कहानी मुझे सुनाई थी कि पापा एक छोटे से गांव के थे। उनकी हाई स्कूल तक की शिक्षा गांव में ही हुई थी। रूही बुआ उनसे सात साल छोटी थी। पापा रूही बुआ को बहुत मानते थे और जब वो छोटी थी तो गोद में लेकर पूरे गांव में घूमा करते थे। बुआ जब थोड़ी बड़ी हो गई यानी आठ साल की तब वो पापा का हाथ पकड़कर तालाब तक जाती थी और तालाब में कूदकर नहाने लगती थी। पापा ने ही रूही बुआ को अच्छा तैरना सिखा दिया था। रूही बुआ को बारिश पानी ओस की बूंदे बहुत अच्छी लगती थी। वो बारिश को घंटो निहारा करती थी। दिन में कई बार वो नदी में जाती थी पानी में नहाने एवं कुएं से पानी निकालना भी उन्हें बहुत अच्छा लगता था। वो कुंए से पानी निकालकर घर के आस-पास के सभी पौधों को पानी देती थी, पानी क्या देती थी वो तो पौधोंको पूरी तरह से धो डालती थी। उन्हें पानी से अजीब सा लगाव था। एक मछली की तरह वो घंटो तालाब में नहाया करती थी।

धीरे-धीरे वक्त गुजरता चला गया और पापा को उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली जाना पड़ा। फिर पापा ने अच्छी नौकरी हासिल की और दिल्ली में ही उन्होंने नया मकान ले लिया। रूही बुआ, दादा और दादी जी के साथ गांव में ही रही। उन्होंने दसवी तक की पढ़ाई की। पढ़ने

में वो साधारण थी एवं उन्हें ज्यादा पढ़नेकी इच्छा भी नहीं थी। जब उनकी उम्र 20 साल की हुई तो उनकी शादी हो गई। पापा ने बहुत पैसे खर्च किए थे उनकी शादी में। वो बोलते थे कि उनकी एक ही बहन थी और वो अपने सारे अरमान रूही बुआ की शादी में निकालना चाहते थे। बिदाई के पल रूही बुआ जितना दादा जी और दादी जी के गले मिलकर नहीं रोई उतना पापा के गले मिलकर रोई थी। उनकी बिदाई के बाद करीब बीस दिनों तक पापा आफिस नहीं जा सके थे। फिर दादाजी के बहुत समझाने के बाद वो दिल्ली वापस आए और कामकाज में रम गए।

बुआ की शादी भोपाल में एक आर्मी आफिसर से हुई थी। शादी के बाद वो भोपाल आ गई थी। उन्हें भोपाल बहुत पसंद आया था, लेकिन एक कमी उन्हें खटकती थी। भोपाल में उन्हें गांव के जैसा पानी मिलता था, वहां पानी का अभाव था और उनके पति यानी कि हमारे फूफा भी उनकी पानी की प्यास से हैरान थे। पहले तो वो इसे मजाक में लेते थे लेकिन बाद में वे परेशान रहने लगे। खैर इधर पापा की भी शादी हो गई थी और वो दिल्ली में ही सेटल हो गए थे। शादी में बुआ आई थी, कुछ दिनोंके लिए गांव भी गई थी और फिर उसी चंचल हिरणीकी तरह गांव में घूमती थी और नदियों में भागकर जाती थी। लेकिन शादी के बाद बुआ में बदलाव आ गया था, उसे नदी में कूदकर नहाने की इच्छा के बावजूद भी उसे उसने अपने अंदर ही दबा लिया था। खैर सात-आठ दिन रहने के बाद वो फिर से भोपाल चली गई।

वक्त बीतता चला गया। फूफा जी का तबादला भोपाल से राजस्थान बार्डर पर हो गया। बुआ भी साथ गई। शादी के सात साल बीत चुके थे, लेकिन उन्हें कोई औलाद नहीं हुई थी। इससे वो मानसिक रूप से थोड़ी परेशान भी रहती थी। बहुत से डॉक्टरों को, पीर-हकीमन को दिखाया, लेकिन कुछ भी फायदा नहीं हुआ।

एक दिन अचानक बुआ की जिदंगी में अंधेरा छा गया। बार्डर पर युद्ध छिड़ी थी, और फूफाजी लड़ते हुए शहीद हो गए थे। फूफाजी के मृत शरीर को बुआ ऐसे देख रही थी जैसे उन्हें विश्वास ही ना हो कि उनका देहांत हो चुका है। जैसे ही उनके मृत शरीर को अंतिम संस्कार के लिए उठाया गया वो उनसे लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगी। उनकी चीत्कार सुनकर सभी की आंखे नम हो गई। बुआ पापा के गले से लग के फूफाजी के मृत शरीर को कभी देखती तो कभी पापा की आंखों में। जैसे कहना चाहती हो कि कुछ करो भईया। इन्हें वापस बुला लो। जो होनी थी, वो टल नहीं सकता था। फूफाजी के अंतिम संस्कारके बाद पापा बुआ को दिल्ली ले आए। वैसे ही बुआ तो पापा कीजान थी और ऐसी अवस्था में तो उन्हें छोड़ना चाहते भी नहीं थे।

दिल्ली में पापा के साथ रहते हुए, पापा के फ्लैट के साने के गार्डन में वो रोज टहलने जाती थी। मम्मी और पापा की कुछ बहस भी हुई, बुआ को घर में रखने के बारे में। मम्मी ने कहा उन्हें गांव भेज देना चाहिए। 2 बीएचके का फ्लैट में हम सब कैसे रह पाएंगे। दो बच्चे हमारे भी हैं कैसे एडजस्ट हो पाएगा। रूही बुआ ने सब सुना था वो कुछ कहना चाहती थी तब तक पापा की मजबूत आवाज उनके कानों में पड़ी कि रूही कहीं नहीं जाएगी। वो मेरे पास ही रहेगी। मैं और मेहनत करूंगा और बड़ा घर ले लूंगा, लेकिन मेरी बहन अब मेरे साथ ही रहेगी। मां खामोश हो गई।

रूही बुआ हमारे साथ ही रहने लगी, वो बहुत प्यारी थी, बहुत अच्छी–अच्छी कहानियां सुनाती थी। कभी-कभी वो फूफा जी के फौज की कहानी भी सुनाती थी, हमेशा हसंती रहती थी, कभी भी उन्होंने फूफाजी को याद कर हमारे सामने आंसू नहीं बहाए

लेकिन उन्हें छुपकर कई बार रोते हुए मैंने देखा था। मैं तो बुआ से इतना लग या था या यूं कहें कि बुआ ने मुझे इतना अपने से लगा लिया था कि वो मेरे बिना खाना भी नहीं खाती थी। मैं मां के पास कम और बुआ के पास ज्यादा रहता था।

पापा ने एक बड़ा फ्लैट खरीदा दिल्ली के एक पॉश इलाके में। वहां पर बड़े रूम के साथ बाल्कनी थी और एक बड़ा टैरेस भी था। बस फिर क्या था बुआ ने बाल्कनी और टेरेस को एक छोटे से बगीचे में परिवर्तित कर दिया। अच्छे-अच्छे क्रोटन्स फूलों के पौधे लगा दिए थे। उन्हें बहुत प्यार से पानी देती थी। दिन भर उसमें ही व्यस्त रहती थी। लेकिन एक परेशानी थी, वहां पर पानी की समस्या थी। कई बार पानी टैंकर से मंगाना पड़ता था। लोग पापा से शिकायत करते थे कि आपके घर में पौधों की वजह से पानी का इस्तेमाल बहुत ज्यादा होता है। पापा ने भी बुआ को एक-दो बार समझाने की कोशिश की थी। बुआ नाराज हो गई थी और उन्होंने पौधे में पानी देना बंद कर दिया था। एक दिन एक गुलाब का पौधा सूख गया तो बुआ उस पौधे को काफी देर तक देखती रही और उनकी आंखों में उस वक्त नमी थी। फिर शाम को पापा के आने के बाद मैंने ये बात उन्हें बताई तो वो बुआ के कमरे में आए और कहा रूही तुझे जैसे इन पौधों को रखना है रख, आज से तुझे मना नहीं करूंगा। बुआ के चेहरे पर एक मासूम बच्चे जैसी चमक आ गई थी और वो थैंक यू भईया कहते हुए पापा के गले लग गई।

हमारी सोसाइटी बहुत अच्छी थी, चारों तरफ से गुलमोहर के पेड़ लगे हुए थे। बुआ गुलमोहर के फूलों को घंटो निहारा करती थी और मुस्कुराया करती थी उन्हें देखकर। गमलों के पौधों को लेकर कभी-कभी मां और बुआ में नोक-झोंक हो जाती थी। बुआ कुछ नहीं कहती थी खामोश रह जाती थी। धीरे-धीरे बुआ खामोश रहने लगी, ना जाने कौन-सा दर्द वो अंदर छुपाकर रखने लगी, शायद मां की कोई बात उन्हें चुभ गई थी, उनके दिल में लग गई थी। पापा ने कई बार पूछा कि रूही आजकल तू खामोश रहने लगी है तो हंसकर टाल जाती थी।

वक्त बीतता रहा। मैं इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में था। लेकिन मैं हर रोज सुबह बुआ से मिलकर ही अपने दिनचर्या में लगता था। कल रात से बारिश हो रही थी और थोड़ी ठंढ भी बढ़ गई थी। मैंने राज को बुआ को कंबल ओढाई, उसके साथ बैठकर कुछ देर बातें की फिर अपने कमरे में आ गया था।

आज सुबह जैसे ही बुआ के कमरे में गया तो उन्हें चिर शांति की प्राप्ति हो चुकी थी और उन्होंने मुस्कराते हुए इस दुनिया को अलविदा कहा था। सबसे खास बात तो ये थी कि जिन्हें पानी की इतनी चाहत थी आज उसी बारिश के पानी ने उन्हें जाते वक्त उन्हें भिगोते हुए उन्हें बिदाई दी थी।

अजय कुमार शर्मा,
मु.का.अ. अमरैप्र सचिवालय / सोलापुर

विचारों का परिपक्व होना भी उसी समय संभव होता है, जब शिक्षा का माध्यम प्रकृतिसिद्ध मातृभाषा हो और हमारी प्रकृति सिद्ध भाषा हिन्दी ही है।

- पं. गिरधर शर्मा

हिंदी नाटक : एक परिचय

नाटक अभिनय की सर्वाधिक संपन्न व्यवस्था है। अभिनय में सात्विक अभिनय इसमें मुख्य होता है। माना जाता है कि इसमें पदार्थ की जगह वाक्य एवं वाक्यार्थ का अभिनय किया जाता है। इसमें काव्यत्व भी समाहित है, कथोपकथन भी सुख-दुख समान्वित लोक में, जो जिसका स्वभाव है, उसके अंगादि सहित अभिनय को नाटक कहते है। दृश्य काव्य को पूर्णता पर पहुंचाने में नाटक की भूमिका सबसे बड़ी है। विश्व के समस्त भावों का अनुकीर्तन या अनुकरण ही नाटक है।

भारतेन्दु के अनुसार नाटक शब्द का अर्थ है – 'नट लोगों की क्रिया'। नाटक में जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित करके उसको सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रुप में अंकित किया जाता है। नाटक जीवन की सांकेतिक अनुकृति नहीं, वरन् सजीव प्रतिलिपि है। परम्परासम्मत यह है कि नाटक में कथानक प्रख्यात होने चाहिए। आधुनिक युग में एक अंक से तीन अंक तक के नाटक प्रस्तुत किए जाते है।

हिंदी नाट्य-साहित्य का आरंभ आधुनिक काल से होता है। हिंदी से पहले संस्कृत और प्राकृत में समृध्द नाट्य-परंपरा थी लेकिन हिंदी नाटकों का विकास आधुनिक युग में ही संभव हो सका। मध्यकाल में लीलाओ-रासलीला, रामलीला, नौटंकी आदि का उदय होने से जननाटकों का प्रचलन बढ़ा। इन लीलाओं में गीत और नृत्य की अधिकता रहती थी और गद्य का बहुत कम प्रयोग होता था। ये लोक-नाटक मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।

17वीं – 18वीं शताब्दी के लगभग कुछ ऐसे नाटक भी लिखे गये जो ब्रजभाषा में थे। इनमें कुछ मौलिक नाटक थे एवं कुछ अनुदित । मौलिक नाटकों में प्राणचंद चौहान का "रामायण महानाटक", लछिराम का "करुणाभरण" व विश्वनाथ सिंह का "आनंद रघुनंदन" है। इसमें "आनंद रघुनंदन" के अतिरिक्त शेष सभी पद्य वर्णनात्मक है। यह हिंदी साहित्य का प्रथम मौलिक नाटक माना जाता है। इन सभी नाटकों के व्याख्यान धार्मिक व पौराणिक हैं। इनके संवाद भी पद्यात्मक हैं।

हिंदी रंगमंच का विकास -

हिंदी रंगमंच के विकास के कुछ प्रमुख चरण इस प्रकार है।

i) भारतेंदु युगीन हिंदी रंगमंच – हिंदी रंगमंच की तलाश का प्रथम प्रयास भारतेंदु ने किया। उनके प्रयास से कई अव्यावसायिक नाटक मंडलियां बनी एवं भारतेंदु ने स्वयं अभिनय भी किया।

भारतेंदु ने अपने समय की तमाम नाट्य शौलियों - संस्कृत परंपरा, पाश्चात्य नाट्य परंपरा, लोक नाट्य परंपरा, पारसी रंगमंच आदि से प्रभाव ग्रहण करते हुए स्वतंत्र हिंदी रंगमंच के निर्माण का प्रयास किया। उन्होंने संस्कृत से मंगलाचरण आदि तत्वों को अपनाया किंतु संस्कृत नाट्य परंपरा में वर्जित कई दृश्यों जैसे-हत्या, आत्महत्या को भी नाटकों में रखा। समय और नाटक की जरुरतों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने जनोपयोगी रंगमंच की स्थापना की और अपने नाटकों – 'अंधेरी नगरी', 'भारत दुर्दशा', 'नीलदेवी' आदि नाटकों का सफल मंचन किया।

भारतेंदु की प्रेरणा से कई अन्य अव्यावसायिक नाटक मंडलियां स्थापित हुई जैसे 'नेशनल थियेटर', 'जन नाटक मंडली', 'भारतेंदु नाटक मंडली', 'नागरी नाटक मंडली' इत्यादि। हिंदी रंगमंच की उपलब्धियों तथा संभावनाओं के विकास की दृष्टि से यह युग आंदोलनकारी युग था।

ii) प्रसाद युगीन हिंदी रंगमंच –

भारतेंदु के बाद रंगमंच के दूसरे काल का प्रतिनिधित्व जयशंकर प्रसाद ने किया। प्रसाद को मूलभूत मान्यता थी कि नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए, रंगमंच के लिए नाटक नहीं। संभावत: इसका कारण पारसी रंगमंच के प्रति प्रसाद का क्षोभ था। अत: हिंदी नाट्य परंपरा को पारसी रंगमंच से मुक्त कराना प्रसाद का दृष्टिकोण था। इस दृष्टिकोण से एक समस्या पैदा हुई। प्रसाद के नाटकों के लिए जिस प्रकार के संस्कार, तकनीक और रंगमंच की आवश्यकता थी वह उस समय उपलब्ध नहीं था। इसलिए प्रसाद के नाटकों को अभिनय की दृष्टि से अव्यावहारिक माना गया। इस काल की विषम परिस्थितियों में हिंदी रंगमंच को जीवित रखने का श्रेय "मॉडर्न थियेटर" को जाता है।

iii) पृथ्वी थियेटर तथा आईपीटीए (इप्टा) का योगदान – सन 1940 के बाद रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'पृथ्वी थियेटर' पृथ्वीराज कपूर के प्रयासों से निर्मित एक अर्ध्दव्यावसायिक संस्था थी जिसने नाटक की उच्चता एवं व्यावसायिकता दोनों का ध्यान रखा।

'इप्टा' (आईपीटीए) अर्थात इंडियन पीपल्स थियेटर असोसिएशन या भारतीय जन नाट्य संघ। यह एक समाजवादी दर्शन प्रेरित एक अर्ध्दराजनीतिक संगठन था। इप्टा ने अपना पूरा ध्यान सामाजिक परिवर्तन में लगाया तथा इसके लिए "नुक्कड नाटक" का भी विकास किया। इसमें नाट्य–वस्तु तथा जीवन तथ्य के बीच अभिन्नतम संबंध माना गया। इप्टा के अनुसार, नाटक का दायित्व शासन व्यवस्था एवं पूंजीवादी तंत्र के पाखंड का उच्चाटन कर जनता को संघर्ष के लिए तैयार करना है।

समकालीन रंगमंच - स्वाधीनता प्राप्ति के बाद का समय हिंदी रंगमंच के असली विकास का काल रहा है। इस काल में नाटक पढ़ने की वस्तु नही बल्कि अभिनय की वस्तु होने लगा। नाटककार, अभिनेता, निर्देशक, समीक्षक तथा दर्शक के बीच की दूरियां घटने लगी।राजनीतिक स्तर पर भी उत्साहवर्धक सहयोग प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन.एस.डी.) के प्रथम निदेशक इब्राहिम अल्काजी ने रंगमंच को एक बारगी शून्य से उठाकर विशाल आयाम देने का प्रयास किया। इन प्रयासों में विकास और परिवर्तन की सार्थक पहल तो थी पर भारतीय संस्कारों एवं चेतना का सर्वथा अभाव था। इस समय पश्चिमी नाटक और शैलियों के प्रयोग और मंचन की बाढ आ गई। शेक्सपियर, ब्रेख्त, चेखव, इब्सन, सार्त्र के नाटकों और नाट्य शैलियों का मंचन हर संस्था ने आरंभ किया था। यह काल सैध्दांतिक दृष्टि से चाहे विकास का काल रहा हो,अनुभव की दृष्टि से भटकाव का काल था क्योंकि प्रयोगधर्मिता, आधुनिकता और नएपन के बावजूद भारतीयता और भारतीय लोक-मानस यहां नदारद था।

1960-70 के काल में पुन: कुछ सार्थक प्रयास सामने आए। हिंदी के श्रेष्ठतम नाटक इसी काल में लिखे गये तथा रंगमंच ने इन रचनाओं के चुनौती के तौर पर स्वीकार कर लिया। प्रशिक्षित रंगकर्मियों द्वारा प्रशिक्षण शिविरों की स्थापना तथा देश के विभिन्न भागों में प्रस्तुत की गई नाट्य प्रस्तुत्तियों से देशभर में कई नाट्य संस्थाओं तथा शैलियों का विकास हुआ। इनमें 'श्रीराम सेंटर' के साथ-साथ अभिमान', 'देशांतर', 'अनामिका', 'रुपांतर', 'दर्पण' आदि प्रमुख हैं। देशांतर ने 'गुणदेवता', 'तुगलक' आदि का सफल मंचन किया, तो अभिमान ने 'गिनी-पिग', 'पागल घोडा' आदि का। मौलिक नाटकों के साथ-साथ

अनुदित नाटक भी आए। नाटककारों में बादल सरकार ,विजय तेंदुलकर तथा गिरीश कर्नाड के अनुदित नाटक तथा शैलियां हिंदी रंगमंच पर कई बार प्रस्तुत हुई।

समकालीन नाटक के विकास क्रम में 1976-77 का समय बेहद रचनात्मक कहा जाता है। यह वह समय था जब हिंदी रंगमंच और नाट्य लेखन पाश्चात्य रंग - शैलियों से ऊबने लगा था और सार्थकता की तलाश में देशीपन की संवेदना के साथ लोक - नाट्य शैलियों की ओर मुडने लगा था।सर्वेशर के नाटक 'बकरी', मणिमधुर के 'रसगंधर्व' और 'दुलारीबाई' ने सहसा वातावरण बदल दिया। ये नाटक नौटंकी आदि के लोकनाट्य रुपों और शैलियों में देशभर के विभिन्न भागों में मंचित किए गए और सराहे गए। हबीब तनवीर ने 'चरनदास चोर' छत्तीसगढी रुप में,कारंत ने 'अंधेर नगरी' यक्षगान शैली में और बंसीकौल ने 'आला अफसर' का नौटंकी शैली में सफल मंचन किया। जैसे हर विधा की कुछ सीमाएं होती है, हिंदी रंगमंच की भी रही है। नई-नई रंग शैलियों, संयोजनाओं, संगीत शैलियों और प्रतीकों ने विस्तार और विलक्षणता अवश्य प्रदान की परंतु यह सब रंगमंच को गहरी संवेदना व अभिनेता को व्यक्तित्व नहीं दे सका है जो रंगमंच का आधार है।

राजीव टी.वलिवकर
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग/सोलापुर

जिस प्रकार बंगाल भाषा के द्वारा बंगाल में एकता का पौधा प्रफुल्लित हुआ है उसी प्रकार हिन्दी भाषा के साधारण भाषा होने से समस्त भारतवासियों में एकता तरु की कलियाँ अवश्य ही खिलेंगी।

- शारदाचरण मित्र

पथ पे विकास के उन्मुक्त देश चाहिए

धर्म के नाम पर राजनीति बंद हो
मजहबी आधार पर ना कोई द्वन्द्व हो ।
सारे ही त्योहार, सब मिलके मनाएं,
झूमें सब साथ में, और प्रेम गीत गाएं ।।
सांप्रदायिक भेद से मुक्त देश चाहिए।
पथ पे विकास के उन्मुक्त देश चाहिए।।

क्षेत्रवादी भावना का आज अभी अंत हो,
मांगे अलगाव की जो, खात्मा तुरन्त हो।
राष्ट्र को बांटने की, साजिशे समाप्त हो,
ऐक्य का भाव, सबके दिलों में प्राप्त हो ।।
क्षेत्रवादी सोच से मुक्त देश चाहिए।
पथ पे विकास के उन्मुक्त देश चाहिए।।

जाति-वर्ग नाम पे, वोट बैंक बंद हो,
कही भी समाज में, न जातिवादी गंध हो।
जातियों के नाम पर, मारकाट बंद हो,
जाने सबको कर्म से, पहचान जाति बंद हो।
जाति वादी रोग से मुक्त देश चाहिए।
पथ पे विकास के उन्मुक्त देश चाहिए ।।

सुरेन्द्र सिंह बारहट,
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी/सोलापुर

नागरीप्रचारिणी सभा के गुण भारी जिन तेरों देवनागरी प्रचार करि दीनो है।

- नाथूराम शंकर शर्मा

आधुनिक टेक्नॉलॉजी

पिछले 20 सालों में दुनिया जिस तरह बदली है उस बदलाव का प्रमुख कारण टेक्नॉलॉजी ही है। ये वह शब्द है जो सिर्फ शब्द ही नहीं, बदलाव की एक भरीपूरी दुनिया है। पिछले दो दशकों में टेक्नॉलॉजी में पूरी दुनिया को अमूल ढंग से बदल रख दिया है।

नैनो टेक्नॉलॉजी-इस तकनीक से ही कम कीमत और कम मेहनत में उच्च गुणवत्ता सम्भव है।

भारत में नैनो शब्द टाटा मोटर की छोटी कार नैनो के कारण सुर्खियों में आया जिसे टाटा मोटर कंपनी ने जनवरी 2008 को नई दिल्ली के 9 वें आटो एक्सपो में लौच किया था सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर, भवन-निर्माण सामग्री, वस्त्र उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स और दूर-संचार, घरेलू उपकरण, काग़ज़ और पैकिंग उद्योग, आहार, वैज्ञानिक उपकरण, चिकित्सा और स्वास्थ्य, खेल जगत, ऑटोमोबाइल्स, अंतरिक्ष विज्ञान, कॉस्मेटिक्स तथा अनुसन्धान और विकास जैसे अनेक क्षेत्र हैं जहाँ नैनो टेक्नॉलॉजी ने धूम मचा दी है। इसने हमें दीर्घकालिक, साफ-स्वच्छ, सुरक्षित, सस्ते और इको-फ्रेंडली उत्पाद उपलब्ध करवाए हैं। नैनोमटैरियल, नैनोबॉट्स, नैनोपावडर, नैनोट्यूब्स, नैनोअसेम्ब्लर्स, नैनोरेप्लिकेटर्स, नैनोमशीन और नैनोफैक्टरी ये तो बस कुछ नाम ही हैं

सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर - इंटरनेट, फेसबुक, प्ले-स्टेशन, इन्स्टाग्राम, आइ फोन, वाई-फाई, क्लोनिंग, ब्ल्यू टूथ, एंड्राइड आदि शब्दों की उत्पत्ति पिछले दो दशकों को ही हुई है। इनके द्वारा इन्सानी सोच का दायरा एवं मानव जीवन को तेजी से बदलकर रख दिया गया है।

वर्ष 1995 में भारत ने मोबाइल फोन की शुरुवात कलकत्ता शहर से प्रारंभ हुई है। कलकत्ता वही शहर हैं जहां से सबसे पहले भारत में टेलीफोन की शुरुवात हुई थी। एक दौर था जब टेलीफोन के लिए आम भारतवासी को 8-10 साल का इंतजार करना पडता था और जिसे वो फोन का कनेक्शन मिल जाता था तो वह मोहल्ले का वीआईपी होता था। वर्तमान में देश में आज लग-भग 90 करोड़ से ज्यादा मोबाइल फोन के कनेक्शन हैं। यूवाओं में स्मार्ट फोन काफी प्रचलीत है। जिससे वे अपना दैनिक काम तथा संपर्क बहुत बड़ी आसानी और तेज रफ्तार से कर लेते है। मोबाइल ने इंटरनेट को आसान और पोर्टेबल बना दिया है। दुनिया भर की तरह भारत वासी भी मोबाइल के जरिए इंटरनेट का उपयोग सुलभता और सुगमता से कर रहे हैं। मोबाइल पर इंटरनेट गेनिंग, एसएमएस, एमएमएस और डेटा डाउनलोडिंग का काम आसानी और तेज रफ्तार से हो रहा है तथा आज संपर्क, संवाद और संचार आधुनिक तेज रफ्तार जीवन शैली का हिस्सा बन गया है। उन्नत टेक्नॉलॉजी से बड़े आकार के डेटा स्टोअर करने वाले प्रोसेसर को छोटे से माइक्रो चीप में तबदील कर दिया है और उसे मोबाइल द्वारा कहीं भी ले जाना अत्यंत आसान कर दिया है।

इंटरनेट आधुनिक मानव सभ्यता की महत्वपूर्ण खोज है। इस एक खोज से मानव जाति के कई चीजें प्रभावित हुई है। इसके द्वारा हम दुनिया भर की किसी भी कोने की सभी जानकारी हासिल कर लेते हैं। पिछले कई वर्षों से गूगल सबसे बड़ा सर्च इंजन है। छोटी से छोटी जानकारी सेकंदों में गूगल से मिल जाती है। गूगल पर लगभग 130 करोड़ से ज्यादा पेजों की जानकारी उपलब्ध है जिसे रोजाना 10 करोड़ और लोग देखते हैं। इंटरनेट आसानी से उपलब्ध होने के कारण ई-बैंकिंग, ई-शॉपिंग, ई-लर्निंग आदि. प्रणाली की शुरुवात हुई है .ई-बैंकिंग मदत से बैंकों में कोर-बैंकिंग सुविधा तथा एक स्थान से दूसरे स्थान के खातों में लेन-देन करना आसान हुआ है। ई-शॉपिंग सुविधा द्वारा हम अपने मोबाइल से ऑन-लाइन शॉपिंग वेबसाइट के द्वारा दुनिया भर की कोई भी वस्तु घर बैठें कर सकते हैं। वर्तमान में ई-लर्निंग

वेबसाइट/ एप काफी प्रचलीत हो रहा है। वर्तमान समय में 5 वर्ष से अधिक के बच्चे से 100 तक के व्यक्तियों के लिए घर बैठे कुछ भी सीखने के लिए ई-लर्निंग सिस्टम आसानी से उपलब्ध है।

सॅप (SAP) ई-लर्निंग सिस्टम विश्व में पहला जो कि जर्मनी में शुरु हुआ, जिसमें कई वर्जन हैं। उसका उपयोग अधिकांश कंपनियों में उपयोग में लाया जाता रहा है। EDUCAB, Skillsoft आदि ई-लर्निंग सिस्टम भारत में काफी मशहूर है| सोशल नेटवर्किंग में फेसबुक, ट्वीटर, वॉटसअप, इन्स्टाग्राम यह प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट है जिसका आज पूरे विश्व में 08 लोगों में से 01 दैनिक उपयोग कर रहे है। फेसबुक नेटवर्किंग साइट से ही चैटिंग शब्द का अविष्कार तथा ट्वीटर नेटवर्किंग साइट से ट्वीट शब्द का अविष्कार हुआ है। आजकल वर्तमान में भारत के प्रमुख राजनेता, उद्योगपती, फिल्मि कलाकार एवं अपने-अपने क्षेत्र के प्रमुख हस्तियों के साथ-साथ आम भारतवासी भी फोन पर बात-चीत कम करके ज्यादा वॉटसअप, चैटिंग एवं ट्वीट करने लगे हैं।

इस प्रकार पिछले दो दशकों में आधुनिक टेक्नॉलॉजी मानव की अखंड ऊर्जा और असीम क्षमता को एकत्रित कर दिया है। आधुनिक टेक्नॉलॉजी ऊर्जा और क्षमता का अपव्यय गौण हो जाए, तो परिणाम हमेशा ही अद्‌भुत होगें। आधुनिक टेक्नॉलॉजी बिना मानव जीवन अधूरा, प्रभुत्वहीन और नीरस हो जाएगा।

राजेशकुमार बी. साहु
कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग/सोलापुर

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा देने से अल्पकाल में हो सकता है; उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।

- घनश्याम सिंह

विदेशी भाषा में शिक्षा होने के कारण हमारी बुद्धि भी विदेशी हो गई है।

सोलापुर स्टेशन

" मध्य-रेल" की शान है यह,
भारतीय रेल का सितारा ।
सुंदर,स्वच्छ और सबसे उन्नत,
सोलापुर स्टेशन है प्यारा ।

" आईएसओ 14001:2015" से हुआ सम्मानित,
मध्य रेल में पहला स्थान ।
"भारतीय रेल में "उन्नीस"रैंक,
गौरवान्वित हुआ मल्होत्रा सर का नाम।

रेल मंत्री जी का अटल विश्वास
इंटरनैशनल एयर पोर्ट का हुआ एहसास
"आधुनिक स्टेशन" का नाम दिया,
"2020 के कैलेंडर में," सोलापुर को स्थान दिया।

महाराष्ट्र की पावन भू पर,
सोलापुर सर्वदा अग्रणी है।
यातायात पर्यटन के कारण,
भारत इसका सदा ऋणी है।

कितनी मेहनत से मिला सम्मान,
उसका मिलकर मूल्य चुकाएं।
आओ हम सब कसम यह खाएं,
अपने स्टेशन को स्वच्छ बनाएं।

गजानन्द मीणा
स्टेशन निदेशक,सोलापुर

कु.अदिती कक्षा 8वीं
पुत्री राजीव टी.वलिवकर,कनिष्ठ अनुवादक

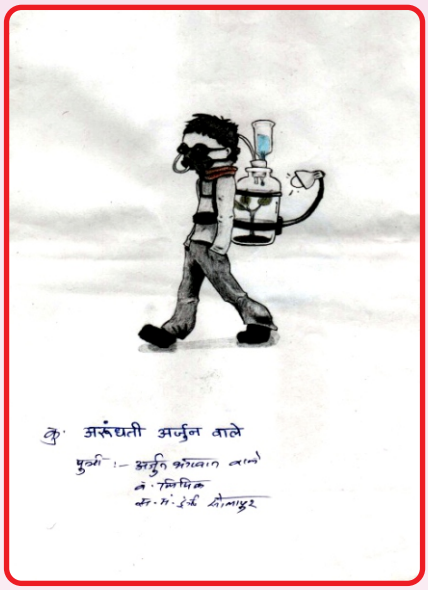

कु.अरुंधती
पुत्री अर्जून भगवान वाले, वरिष्ठ लिपिक,
समंइंजी/सोलापुर

अर्चना विलास कुलकर्णी
(डी.ई.ओ. सिगनल एवं दूरसंचार विभाग)

ऋतुराज, 8वीं कक्षा
पुत्र दशरथ आठवले,
कनिष्ठ लिपिक, भंडार शाखा, सोलापुर

मोनिष मस्के, ट्रैकमैन, सोलापुर

कुमारी प्रभा पुत्री अशोक कुमार तिवारी,
सीसे इंजी, (रेप) सोलापुर

राजभाषा सप्ताह 2019 की झलकियां

महाप्रबंधक वार्षिक निरीक्षण 2020 की झलकियां

कलबुरगि स्टेशन पर आयोजित हिंदी कार्यशाला पुरस्कार वितरण

नराकास,शील्ड प्रथम पुरस्कार

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

राजभाषा दिग्दर्शिका 2020 का विमोचन

रेलवे अस्पताल,सोलापुर के वार्ड में
हिंदी पत्रिकाएं वितरण का प्रारंभ

श्री वी.के.नागर, अमरेप्र,
सोलापुर रेलवे बोर्ड स्तर पर राजभाषा
पुरस्कार से सम्मानित

स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
पंढरपुर की बैठक

हिंदी कार्यशाला का उदघाटन

मौसमी बुखार (वायरल फीवर)

मौसमी बुखार एक आम समस्या है और किसी भी मौसम में हो सकता है। परंतु बरसात के मौसम में वायरस कुछ ज्यादा सक्रिय होते है।

- मौसमी बुखार के लक्षण
- बुखार
- ठंड लगना या फिर चक्कर आना
- सिरदर्द या मांस पेशियों में दर्द होना
- नाक का बहना या बंद होना
- गले में दर्द, खासी और कभी कभी उल्टी और दस्त
- कभी कभी शरीर पर लाल स्पॉट आ जाते है
- जांच
- ज्यादा तर मरीजों का डायग्नोसिस क्लिनीकली की जाती है तथा गंभीर रोगियों में बलगम या खून की जांच होती है।
- इलाज

मौसमी बुखार का इलाज लक्षणों के आधार पर किया जाता है। इसमें आम तौर पर प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक) दवाओं का इस्तेमाल होता है जबकि विषाणु संसर्ग एंटीबायोटिक दवाओं से ठीक नहीं होता है। एंटिबायोटिक दवाएं इम्यूनिटी (रोग प्रतिरोधक शक्ती) कम होने से होनेवाली दूसरी कुछ संसर्ग रोकने का काम करती है।

- बुखार के लिए पॅरासिटॅमॉल का प्रयोग करें और बुखार तेज हो तो गीले कपडे से शरीर को पोंछे तरल पदार्थ जैसे की पानी, सूप, चाय, नारियल पानी और दात का पानी ज्यादा तर वायरल संक्रमण एक सप्ताह में स्वत: ठीक हो जाते है
- कैसे रोक सकते हो ?

रोकथाम उपचार से प्रभावी उपाय है। इसलिए स्वच्छता और साफ-सफाई किसी भी बिमारी को आने से रोकने में मददगार साबित होती है। कुछ काम करने के बाद या कुछ खाने से पहले अगर साबुण से हात धोया जाता है तो आधी बिमारियों तो आने से पहले समाप्त होगी।

खासते या छींकते समय रुमाल से मुँह और नाक को ढक के रखना चाहिए ओर मुँह को खासते समय दूर रखना चाहिए।

भीड़ भरी जगह पर जाने से (जहां तक संभव हो) बचना चाहिए।

छोटे बच्चे और बूढ़ों का तथा गर्भवती महिलाओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अपने घर के आसपास गंदगी ना फैले इसकी खबरदारी लेनी चाहिए।

डॉक्टर के सलाह के बिना दवाई लेने से बचना चाहिए।

दवाईयों का पूरा कोर्स करना चाहिए (बीच में ही दवाईयां खाना बंद नही करना चाहिए)।

समय पर डॉक्टर को दिखाना जरुरी है, ना कि बिमारी बहुत बढ़ जाने के बाद।

घर में जिस व्यक्ति को स्वच्छता के बारे में ज्यादा पता हो उसी व्यक्ति ने घर के बाकी सदस्यों को स्वच्छता का महत्व बताना चाहिए। क्योंकि आधी से ज्यादा बिमारियों गंदगी से फैलती है। हम जहां-जहां जाते है वहाँ वहां स्वच्छता रहे इसकी पूरी जिम्मेदारी जितनी प्रशसन की है उससे भी ज्यादा हर एक नागरिक की है। इसलिए गांधी जी कहते है "राजनितिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी स्वच्छता है"।

पांडुरंग शिंदे
मुख्य नर्सिंग अधीक्षक,
रेलवे अस्पताल, कुर्डुवाडी

ईडली-डोसा

आज अमितला थोडी शॉपिंग करायची होती म्हणून आम्ही नवीपेठेत गेलो होतो.

ते रस्ते ती गर्दी सारखं खूप गोंगाटवाणं होत. आजकाल माणसं इतकी स्वतःता गुंतली होती कि त्यांना एकमेकांकडे बघयलाही वेळ नव्हता.

बरीच खरेदी करून झाल्यावर आम्ही एका हॉटेलमध्ये शिरलो, तेव्हां सांबारचा हलका आंबट वास माझ्या नाकाला स्पर्शून गेला. मी समोरच्या कॉउंटर वर पहिला, तिथे एक गोल गुबगुबीत आकारची आकृती बसली होती.

त्याव्यक्तीने चशम्यातून आपले आपले गुबगुबीत डोळे वर करत माझ्याकडे पहिले त्या व्यक्तीशी काय बोलायचा किबहुना सांगायचा ते त्याच्या शेजारी लावलेल्या भाव फलकावरुन मला कळाल. त्यात लिहिलं होता-

शिरा 1 प्लेट 20रु
पोहे 1 प्लेट 20रु
मसाला डोसा .....
ईडली – वडा.....

मी त्या गोलाकार गुबगुबीत चेहऱ्याकडे बघून म्हणालो, 2 प्लेट मसाला डोसा .

मला वाटला तितका तो जड मानुंस विचित्र नव्हता. मी ऑरडर दिल्यावर माझ्याकडे बघून तो हसला. त्यागोलाकार चेहऱ्यावर उमटलेले अर्धवर्तुळ पाहून मला जास्तच हसू आल. पण त्याचं हॉटेलात येवून त्याच्यावर हसणं बरोबर नाही ना म्हणून मी हासण टाळला. शेवटी पैसे माझे असले तरी खाऊ तोघालणार होता ना. मी स्मित हास्य करून त्याच्याकडून उरलेले सुटते पैसे घेतले त्यात एक 5 चा गोलडन चकचकीत कॉइन आला होता तो मी खिशात घातला आणि आम्ही टेबलापाशी गेलो .

समोरासमोर 2 खुर्च्या, एका खुर्चीत मी आणि समोर अमित बसला. आम्ही रिअल इस्टेट बद्दल बोलत असतानाच बरोबर 5 मिनिटांनी ऑर्डर आली. आम्ही गप्पा मारताच खायला सुरुवात केली. काही वेळानी मला लक्षात आल कि आमच्या शेजारच्य टेबलावर एक मल्याळी कुटुंब बसल होता ते मल्याळी आहेत ते त्यांच्यातच बसलेल्या एका काकूंच्या आडव्या लावलेल्या पांढ-या गंध वरून मला कळाल.

आत्ता हे हॉटेल जरी ईडली- डोस्याचं होतं तरी त्या शेजारच्या काकूंची माझी प्लेट मध्ये काय आहे हे बघण्याची धडपड चालली होती आणि ती मला समजली.

म्हणून मी मुद्दाम खुर्ची वर बसल्या बसल्याच तिरपा झालो आणि माझ्या प्लेट मध्ये काय आहे हे त्यांना बघू दिल. माझ्याही प्लेट मध्ये तसाच ईडली-डोसा आहे हे पाहून बहुदा त्यांना हायसं वाटल असाव. कारण त्यांची ती धडपड नंतर थांबली.

पण मी मनात ठरवलं होतं कि त्यांच्या सारखच इतर लोकांनी जर माझ्या प्लेट मध्ये वाकून बघण्याचा प्रयत्न केला तर सरळ उठून मोठ्या खणखणीत आवाजात म्हणायचा "इथे जमलेल्या तमाम बंधु भगीनिनो मी सांगू इच्छितो कि, मी सुद्धा ईडली डोसाच खात आहे." आणि मगच खायला सुरुवात करावी.

म्हणजे त्यांची वाकून बघण्याची व माझी चोरून खायची धडपड वाचेल.

****

अर्चना विलास कुलकर्णी
डी.ई.ओ.सिगनल एवं दूरसंचार विभाग,
सोलापुर

है स्वाभिमान

है स्वाभिमान
ना कोई गुमान
लोगो को घुमाता हुं
हॉं मै रेल चलाता हुं
आगे इंजन अपना है
सफर सुरक्षित सपना है
करता हुँ पुरा आराम
ताकि ना हो
कोई परेशान
हर कर्तव्य को निभाकर
हॉं मै रेल चलाता हुं
लोगो को घुमाता हुं
मंजिल को पहुँचाकर
खुशियों के आंगन
जाता हुं
बच्चे बीबी घर परिवार
मॉं भी राहे देख रही
आ रहा हैं, मेरा लाल
बच्चों से वो बोल रही
मिलती है वो सारी खुशिया
जब मैं घर को जाता हुं
हॉं मैं रेल चलाता हुं

दुर्गा कुमार
एएलपी, दौंड टी नंबर 99

मेरा गांव

मेरा गांव होकर भी मुझे क्यों अजनबी-सा लगता है

कोई न मेरा इसलिये क्या, ऑखों में पानी भरता है.

दरवाजों से पहूंचा जहां भी, मुंह मोडकर सारे खडे

गांवकी नदी के किनारे, कैसे, बदले समृध्दि के घाट ये?

रास्ते भी अब अलगसे, गांववाले लगते पराये

खून के रिश्ते भी प्यारे, सब निखरकर रह गये.

खो गये वे पेड ऊंचे अब बौनी सब यहां

प्राण में फूल खिलाती, मुरझा गयी है बेलियां

नहीं मुझे गम इस बात का, पानी नहीं दिया किसीने यहां

प्रेमसे जो पसीजते थे, - हुदय के झरने गये कहां ?

राजेशकुमार बी. साहू
कनिष्ठ अनुवादक,
राजभाषा विभाग/सोलापुर *

इंसानियत का धर्म

मेरा आप सभी से निवेदन है कि इस लेख को जरुर साझा करें क्योंकि कहते है कि कोई भी एक क्षण या घटना किसी भी इंसान की जिंदगी बदल सकती है।

बस यही है मेरा मिशन, विजन और इसी में मैं दिन-रात लगा हुआ हूं। हम सब मिलकर एक दूसरे की इज्जत और उसकी कदर करें, तो हम सब में एक नए धर्म की उत्पत्ति होगी और वह धर्म है इंसानियत का धर्म। इस दुनियां में सबसे उच्च कोटि का धर्म सिर्फ और सिर्फ इंसानियत का धर्म है जो कि किसी भी स्तर पर इंसानों में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करता।

इंसानियत का धर्म हम सभी को एक सूत्र में पिरोने वाला धर्म है। इंसानियत का धर्म हमें इंसानियत सिखाता है और इंसानियत ही देश, समाज, विश्व की उन्नति में सहायक होती है।

इंसान ही अपने परिवार, समाज का मुख्य स्तंभ है, इंसानियत का मुख्य उद्देश्य यह है कि भारत समाज अर्थात संपूर्ण भारत जाति के हित में कार्य करें। प्रत्येक पीढित, गरीब, आपदा ग्रस्त व्यक्ति की सेवा इंसानियत का सर्वोच्च आदेश है। संकट में उदारता पूर्वक मदद की जाए यह भी ईश्वर की पूजा का ही एक मार्ग है।

भूखे को रोटी खिलाना, बीमार को उचित चिकित्सा प्रबंध करना, बुजुर्गों को उस हाल अवस्था में उनका सहारा बनना, पीढित आपदा ग्रस्त व्यक्ति की उसकी समस्या से बाहर निकालना, किसी व्यक्ति समूह को शोषण से बचाना, महिला के साथ अभद्र व्यवहार होने पर उसे मानसिक पीड़ा से उबारना एवं उसकी रक्षा करना, विकलांग व्यक्ति को सहानुभूति देकर यथाशक्ति उनको सहायता देना और उसके जीवन को सामग्री रुप से जीने में सहायक बनना। यह सभी इंसानियत के अंतर्गत आते हैं और ईश्वर की आराधना, पूर्व अर्चना से भी अधिक कल्याणकारी कार्य है। किसी महान व्यक्ति ने कहा है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है और हमें स्वयं ऐसा व्यवहार दूसरों से नहीं करना चाहिए जो हमें पसंद न हो हम सबको देश और समाज के विकास में योगदान देना चाहिए। हम सबको प्राथमिकता से अपने देश और समाज के हित के बारे में सोचना चाहिए और यथासंभव अपना योगदान देना चाहिए। हम सहायक बनें, जिस देश में हमने जन्म लिया, जिस समाज में हम पहले पढ़े, जिसने हमें एक पहचान दी उस समाज की उन्नति सुख-सुविधाओं का लाभ मिला, उस समाज की उन्नति निरंतर बनी रहे, उसके कष्टो का निवारण हो, समाज में व्यस्त कुरीतियों व अज्ञातताओं को मिटाने का प्रयास हमारे द्वारा होना चाहिए। प्रत्येक मानव को देश के सम्मान व सुरक्षा तथा अधिक आवश्यकताओं के लिए यथाशक्ति कार्य करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति या मानव अपने समाज व देश के प्रति वफादार ना हो सका तो वह इंसान कहवाने का हक नहीं रखता। देश व समाज के लिए श्रमित करने वाला, उसे क्षति पहुंचाने वाला अथवा देश के दुश्मनों का साथ देने वाला इंसानियत का सबसे बड़ा दुश्मन है, उसका जीवन देश का समाज पर बोझ है, ऐसे व्यक्ति देश को, समाज को दीपक की भांति नष्ट करते रहते हैं, तो हमारे कहने का मतलब यह है कि इंसानियत का मुख्य कर्तव्य है एक व्यक्ति देश व समाज के हित के लिए सोचे, उसमें अपना योगदान करें, देश के नैतिक नियमों व कानूनों का पालन करें, अति महत्वाकांक्षा इंसान को गलत कार्य करने वो मजबूर करती है, इसलिए इनसे बचना अति आवश्यक है, प्रत्येक व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि इस संसार में संभालने की कोई सीमा नहीं है, शक्तिशाली अथवा ताकतवर की कोई सीमा नहीं है, अत: अपनी क्षमता सीमा को पहचान कर आपके कार्य को पूर्ण लगन और प्रेम से अर्जित धन से संतुष्ट रहना अति आवश्यक है। अपनी

इच्छाओं की सीमा तय नहीं करने वाला व्यक्ति अपने लिए और समाज के लिए समस्याएं पैदा करता है, उच्च विचारों को अपनाते हुए समाज के विकास को सहयोगी ही बनना ही इंसानियत है, मेरे आज के लेख का सारांश यह है कि हम इंसानों को इसानियत का धर्म अपनाना चाहिए क्योंकि वहां पर भेद-भाव की कोई व्यवस्था नहीं है। ऐसा है इंसानियत का धर्म।

सुरेश कुमार रतमेले,
मुख्य टिकट निरीक्षक / सोलापुर मध्य रेल

भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।

- पुरुषोत्तमदास टंडन

मजदूर दिवस

महाराष्ट्र में मजदूर दिवस पर
मनोज नाम का एक बालक
ना था जिसका कोई पालक
कर्म रत मजदूरी कर रहा था

पेट पीठ से सटा हुआ
नत नयन धसा हुआ

मई की मध्य तपती धूप
पत्तों सा सुर्ख हो रहा रूप

मिट्टी से सना हुआ बाल
लूं में झुलसी हुई खाल

पूरी तरह काम में रत था
मजदूर दिवस पर भी
अपनों के पोषण में व्यस्त था

मैंने पूछा क्यों रें मनोज
काम पर फिर आ गए
छुट्टी नहीं लगा गए

काहे का छुट्टी साहब
घर दो चार पैसे आएंगे
तो सब मिलकर खाएंगे

उन्नत भारत के सैकड़ों घरों में
सुबह का चूल्हा शाम में जलता है
आज भी आम मजदूरों को
दो वक्त की रोटी एक वक्त ही मिलता है।

संतोष कुमार शर्मा
टीटीआई/सोलापुर

सार्वजनिक स्थान और गंदगी

जब भी मैं एक सार्वजनिक स्थान पर खड़ा होता हूं। कहीं न कहीं लिखा होता है - **'कृपया गंदा मत कीजिए'**। अगर इस आदेश, निदेश या उपदेश के साथ यदि यह भी लिखा होता कि गंदा शब्द से क्या अर्थ होता है तो मुझे इसके अर्थ को समझने में सहूलियत होती। शब्द और अर्थ का रात-दिन विचार करते-करते मुझे प्रत्येक शब्द के अर्थ में संदेह हो जाता है। जो लोग बेधड़क शब्दों का प्रयोग करते हैं वे सचमुच कितने भाग्यशाली हैं? मैं तो उपर्युक्त वाक्य को लेकर देश, काल, पात्र आदि की उलझन में पड़ गया हूँ। गंदा का जो अर्थ मेरी दृष्टि में है वही बहुतों की दृष्टि में नहीं है। मैं मिट्टी के स्पर्श से बचना चाहता हूँ क्योंकि उसमें मुझे गंदगी दीखती है। कपड़े पर मिट्टी का धब्बा भी आँखों को खटकने लगता है क्योंकि उससे मेरा समाजिक ओहदा कमजोर लगता है। किंतु ऐसे करोड़ों लोग हैं जिन्हें मिट्टी से इतना प्यार है कि वे उससे अलग रहने की कल्पना भी नहीं कर सकते। । मेरी और उनकी दृष्टि में जो भेद है वह गंदगी की धारणा में भी भेद बताता है। जो मेरी नज़र में गंदा है वह उनकी नज़र में गंदा तो नहीं है, बल्कि साफ है और पवित्र भी।

एक दिन मैं कहीं जा रहा था। स्टेशन पर पहुँचा तो मालूम हुआ कि गाड़ी आधा घंटा लेट है।समय पास करने के लिहाज से प्लेटफार्म पर टहलने लगा। थोड़ी दूर पर एक सज्जन अपना बिस्तर लगाकर बैठे थे। देखने से देहात के रहनेवाले और धनी लग रहे थे। दो आदमी उनके पास खड़े थे जिनसे वे बात कर रहे थे और प्रायः प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर एक बार थूक देते थे। जब एक दिशा थूक से सरस हो गई तो दूसरी और मुँह कर बैठ गए। पर क्रम चलता ही रहा और आधे घंटे के भीतर अपने आस-पास की जमीन को उन्होंने तर कर दिया। मैं उनकी इस हरकत को टहलते-टहलते ध्यान से देखता रहा और मेरा निष्कर्ष रहा कि जिस लापरवाही के भाव से आसपास की जमीन को सरसता प्रदान कर रहे थे उसे देखकर ही मैं उद्विग्न हो रहा था। अपने मनोगत में वो कोई ऐसा काम नहीं कर रहे थे जो गंदा कहला सके। यह उनके जीवन का सहज क्रम था। उनके थूक में रंगीनी नहीं थी अर्थात वे समाज-सेवी नहीं तंबाकू-सेवी थे। समाज-सेवियों की छाप तो और भी गहरी होती है और मुझे ऐसे समाज-सेवी बहुत कम मिले जो पीक फेंकते समय स्थान-अस्थान का विचार करते हों। यों, सामान्यतः तंबाकू खानेवालों की अपेक्षा पान खानेवाले अधिक संपन्न और सभ्य और गुटखा खाने वाले असभ्य समझे जाते हैं। व्यसनों में भी वर्ग-भावना है। बीड़ी पीने की अपेक्षा सिगरेट पीना अधिक संपन्नता का सूचक है और सिगरेटों में भी कीमत के अनुसार नीची और ऊंची जातियां होती हैं जिनसे पीनेवाले का सामाजिक स्तर निर्धारित होता है। तो सामाजिक स्तर में चाहे जो भी भेद हो, गंदगी फैलाने में सब समान हैं और इस तरह के व्यक्तियों की वजह से हमारे समाज की नीव को जंग लग रही है।

सच तो यह है कि सफाई और गंदगी का संबंध सामाजिक स्तर से उतना नहीं है जितना व्यक्तिगत संस्कार से। कहीं तो यह संस्कार सहज होता है और कहीं प्रयासों से अर्जित। पाश्चात्य देशों में सफाई की भावना जितनी प्रबल है, गंदगी की भावना उतनी ही हमारे यहाँ। पश्चिम के सभी लोग जन्म से ही स्वच्छता-प्रेमी हैं, ऐसा नहीं माना जा सकता किंतु सामाजिकता से प्रेरित होकर उन्होंने स्वच्छता का अपने भीतर विकास कर लिया है। तभी तो पूरा का पूरा देश स्वच्छ दीखता है। हमारे यहां एक को गंदगी करते देख दूसरे को भी गंदगी करने की प्रेरणा मिलती है। हमारी यह धारणा भी है कि हमारा काम गंदा करना है और साफ करना सफाईकर्मी का। हम भूल जाते हैं कि जहां हर आदमी गंदा करने को कटिबद्ध हो वहां सफाईकर्मी कितनी सफाई रख सकता है।

आपने अक्सर रेलगाड़ी की प्रथम श्रेणी के डब्बों में मूंगफली के छिलके या वैसी ही अजीबोगरीब चीजें बिखरी देखी होंगी। प्रथम श्रेणी के यात्री संपन्न तो होते ही हैं, सुरुचि-संपन्न भी होने चाहिए पर उनकी सुरुचि-संपन्नता का संबंध उनकी मानसिकता और संस्कार से कैसे बैठाया जाय? इसलिए गंदगी का संबंध गरीबी या अशिक्षा से मानना संगत नहीं है। इसलिये ये हर व्यक्ति (बच्चा, बूढा, जवान) का दायित्व है कि हमारे संस्कारों के वृक्ष को इस तरह से रोपा जाये कि हमारी कॉलोनी, नगर, जिला, देश साफ सफाई और स्वस्थ पर्यावरण के उच्च शिखर को छू सके।

मुझे चिंतन का दुरभ्यास होने की वजह से कुछ न कुछ सोचता-विचारता रहता हूं। भारत में

भावात्मक एकता के प्रश्न पर मैंने कई दृष्टियों से सोचा है। धर्म भावात्मक एकता का आधार नहीं बन सका, यह तो प्रत्यक्ष ही है। उसके चलते देश के दो टुकड़े हो गए। जातियां लोंगो को बांटने का समर्थ साधन रही हैं। भाषा को लेकर जो तू-तू, मैं-मैं मची है, वह कहने की चीज नहीं। वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान में भी पर्याप्त अंतर है। फिर भावात्मक एकता का आधार क्या हो? और तब मुझे दो ही आधार दिखाई देते हैं - गरीबी और गंदगी। और किसी आधार पर भारत की भावात्मक एकता संभव हो या न हो, इन दोनों आधारों पर वह संभव हो जाती है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक और असम से गुजरात तक आप एक जैसी गरीबी और एक जैसी गंदगी देखेंगे।पूरे देश मै जो कमी दिखाई देती है वो है सफाई के प्रति लोगों की मानसिकता और जागरूकता।

मैं जब कहीं कोई सूचना देखता हूं तो उससे मेरे मन में एक ही प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और वह है मनोविनोद की। सूचना को लिखने-लिखाने में निश्चय ही काफी पैसे लगते होंगे और उपयोग उससे सिद्ध होते मुझे शायद ही कभी दिखाई दिया हो। संभव है यह मेरी दृष्टि का दोष हो। यों भी दृष्टि मेरी बहुत अच्छी नहीं है; चश्मा लगाता हूं। किंतु केवल दृष्टि-दोष ही है ऐसा भी मेरा अहम मानने को तैयार नहीं। 'कृपया गंदा मत कीजिए' - यह वाक्य जिसने लिखा, या यों कहिए कि लिखवाया, उसकी धारणा गंदगी को फैलने से रोकने के लिये थी। जैसा मैं सोच रहा हूं कि गंदगी का न तो कोई एक रुप है, न एक स्तर और न एक कारण। फिर भी औचित्यबोध के समान अनौचित्यबोध का भी एक सामान्य स्तर हुआ करता है। वही स्थिति गंदगी की भी है। कोलकाता, देहली या मुंबई जैसे नगरों में अनगिनित लोगों का निवास-स्थान फुटपाथ है जिनकी खुशबू और स्वच्छता से हम भी अपरिचित नहीं है! उनके लिए 'कृपया गंदा मत कीजिए' का अर्थ वही नहीं है जो मेरे लिए। तब मैं यह तय नहीं कर पाता कि इस निर्देश को आग्रह मानूं या उपहास। तो जब तक व्यक्ति की मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक हमारे राष्ट्रपिता जी का सपना अधूरा ही दिख रहा है।

हंसराज मीना
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/अहमदनगर

हसावं आपण .....

हसावं आपण, उरातलं दुःख दाबुन इतरांनाही हसवावं
सुखात आपल्या, इतरांनाही सामिल करुण घ्यावं
दुःखात इतरांच्या आपण ही सामिल व्हावं

हसावं आपण, उरातलं दुःख दाबुन इतरानांही हसवावं
सुख आपले, इतरांना सांगाव, दुःख त्यांचे आपणही
ऐकावं

हसावं आपण, उरातलं दुःख दाबुन इतरानांही हसवावं
हसल्यामुळे आपल्या इतरांना त्रास होत नसावं
याचं भान आपल्याला असावं

हसावं आपण, उरातलं दुःख दाबुन इतरानांही हसवावं
हसणं हे जिवंत पणाचे लक्षण आहे हे लक्ष्यात ठेवावं
हसणं हा अलंकार फक्त मनुष्य प्राण्यास लाभलं...
हसण हे सर्वात स्वस्त आभुषण आहे
ते साऱ्यांनी वापरावं

हसावं आपण, उरातलं दुःख दाबुन इतरांनांही हसवावं
हसण हे सर्वात छान फळ, सर्वच ऋतुत मिळतं.....
ते सर्वांनी मिळवावं
हसवावं आपण प्रफुल्लित हसवाव
हसावं आपण प्रफुल्लित हसावं

प्रफुल्लचंद्र सुरेखा बजरंग सज्जन
इंजीनियरी विभाग, सोलापुर

हमारी हिन्दी को कामधेनु बनाना है।

- चंद्रबली पांडेय

मानवता से बडा कोई धर्म नहीं

मानवता क्या है? मानवता हमें यही सिखाती है कि मनुष्य ने एक दूसरे के साथ कैसेट व्यवहार करें, एक दूसरे के साथ कैसा बर्ताव करें।

हमें अगर स्कूल, कॉलेजों में अच्छी तरह से अच्छे संस्कार सिंचन हुआ हो तो हर व्यक्ति मानवता से परिपूर्ण हो जाएगा। संस्कारों की शुरुआत घर से ही होती है। माता-पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार का सिंचन करेंगे तो वही बच्चे बडे होकर समाज को अच्छी तरह से आने ले जा सकते है। एक-दूसरों की मदद करना, जो संकट में फसे है उन्हें मदद करना, उनकी समस्या का हल करना बहुत जरुरी होना है।

आज हमारे समाज में यही दिख रहा है कि मानवता लुप्त होती जा रही है। पडोसी से हम बात नहीं करते उन्हें क्या समस्या है यह हम जानते की कोशिश नहीं करते। जहां-जहां बडे-बडे फ्लैट है वहां के लोग अपने घरों दरवाजों बंद कर बैठते है। अपने पडोस में कौन रहते है यह भी जानने की कोशिश नहीं करते। मुंबई, दिल्ली, कोलकत्ता, चेन्नई जैसे बडे बडे शहरों में औद्योगिकरण से बडी बडी इमारतों में कौन रहते है लेकिन एक-दूसरों को जानने की कोशिश नहीं करते।

कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि पड़ोसी आदमी को हार्ट ऐटक आ जाता है। लेकिन बंद दरवाजे की वजह से उन्हें जो मदद मिलनी चाहिए वह नहीं मिल पाती। उन्हें तुरंत अस्पताल नहीं पहुचाया जाता और समय पर इलाज न होने के कारण मृत्यु हो जाती है।

इसलिए हमें अपने समाज को सुसंस्कृत करना हो तो अपने बच्चों पर अच्छे संस्कार डालने होगे। घर में भी एक-दूसरों का आदर करना सीखाना चाहिए। बच्चे अपने माता-पिता को देखकर ही उनका अनुकरण करते हैं। इसलिए बडो को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने घर में माता-पिता और बुर्जुगो की सेवा करनी चाहिए। बच्चे अक्सर बडों का अनुकरण करते हैं और वे अच्छी बुरी बातें सीखतें है।

आज के युग में बच्चों पर मोबाइल, टीवी, सिनेमा और सोशल मीडिया के कारण अधिकतर बुरा असर पड रहा है। माता-पिता को अपने बच्चों पर ध्यान रखना चाहिए कि हमारे बच्चे मोबाइल पर क्या देखते है। उन्हें इसके दुष्परिणामों के बारे में भी अवगत कराना चाहिए। आज समाज में बडे पैमाने पर कई तरह के अत्याचार हो रहे हैं। हम इस बारे में समाचार-पत्रों और सोशल मीडिया पर विभिन्न घटनाओं को देखते है। ऐसी घटनाएं मानवाता वादी दृष्टिकोन की कमी के कारण ही हो रही है।

मानवता की सीख सभी को अपने घर से होनी चाहिए। बच्चों पर अच्छे संस्कार डालने के लिए उन्हें अच्छी किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। पुराने जमानें में बच्चों को गुरुकुल की शिक्षा दी जाती थी। वहीं पर बच्चें सुसंस्कृत होकर घर आते थे। अब गुरुकुल की शिक्षा लुप्त हो रही है।

मानवता के पाठ की शुरुवात अपने घर से ही होती है। इसलिए हर व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए कि अपने बच्चों पर अच्छे संस्कारों का सिंचन हो। यह ध्यान में रखना चाहिए है कि अच्छे कर्मों का नतीजा अच्छा होता है और बुरे कर्मों का नतीजा बूरा होता है।

अर्जुन बी.वाले
वरिष्ठ लिपिक, समंइंजी./सोलापुर

हमारी भारत भारती की शैशवावस्था का रूप ब्राह्मी या देववाणी है, उसकी किशोरावस्था वैदिक भाषा और संस्कृति उसकी यौवनावस्था की सुंदर मनोहर छटा है।

- बदरीनारायण चौधरी प्रेमधन

निष्पर्ण वृक्ष

निष्पर्ण वृक्ष से पंछी कही दूर निकल गये
तब सुखी शाखाओं से चीख फूट पडी

वृक्षने खूब समझाया,
थोडे दिन ठहरो
वृक्ष फिर से एकबार
फूल पत्तियों से लदेगा
घनी छाया का कालीन बिछायेगा

लेकिन पंछियो ने
निष्पर्ण वृक्ष से रिश्ता तोड दिया
और लहलहाती खेती की ओर
पंखों का रुख मोड दिया.

सर-कंधेपर खेलता पंछियों का जत्था
देखते-देखते निकल गया
तब वृक्ष तने से धर गया

वृक्ष का यह अनुभव
सार्वत्रिक न हो यहीं कामना.

संतोष कुमार
सोलापुर

देश तथा जाति का उपकार उसके बालक तभी कर सकते हैं, जब उन्हें उनकी भाषा द्वारा शिक्षा मिली हो।

- पं. गिरधर शर्मा

मन

मन हुआ पत्थर का
मन हुआ फूल
मन हुआ गहरी खाई
मन हुआ पूल.

मन दुखडे में डूबता है
मनाता है उसे मन
मन मदनशरण हुआ
मन हुआ भजन

भटक जाता है मन तब
मन बताये सदाचार
रुठ जाता है मन तो
मन ही करें प्यार,

मन ऐसा – मन वैसा
मन है नन्हीं सी जान
तब में छिपा है मेरे
मन पंखेरु अनजान.

राजेश कुमार बांसीवाल
कनिष्ठ लिपिक,
मं.रे.प्र सचिवालय, सोलापुर

मेहमान

अपने घर में अब मैं
आइने में दिख रहा हूं
हो गया मेहमान-सा
अलगही इन्सान-सा.

घर बनाया है हसीन
सम्बन्धियों में सुहाने
बगिया भी है सजायी
लगता हूं बावला-सा.

मेरेही आंगन में कितना
हंसते है सारे दोस्त मेरे
जल्लोश है चल रहा
मैंही हंसता अलग-सा.

फुरसत किसे है अब यहां
वे मगन अपने में हैं
देखने की मैं कहा
बैठा हूं मैं अछूत-सा.

कोंपल निकले है नये
मैंही पन्ता पतझर का
ऋतुभी सजधजकर आयी
वृक्ष से हूं मुक्ता-सा.

क्यों मैंने दिल लगाया
बहता है पानी जोर से
इस बहते पानीपर
मैं ही सूखे पात्र-सा.

श्रीमती जयश्री पालवे
पत्नी श्री दत्तू नारायण पालवे,
राजभाषा विभाग, सोलापुर

बफे की दावत

आप माने या नामाने -पर हमारे लिए सबसे बड़ी आफत बफे की दावत। एक दिन हमें भी जाना पड़ा बारात में बीवी बच्चे थे, साथ में। सभी के सभी बाहर के तो थे शो-पीस, पर अंदर से भुखे थे। जैसे ही ..... खाना का संदेशा आया हॉल में भगदड़ सी मच गई पेंडाल में,एक के उपर एक बरसने लगे। जिसने झपट लिया सो झपट लिया। बाकी खड़े तरसने लगें।

एक बाराती – हाथ में लिए प्लेट, इधर से उधर चक्कर लगा रहा था, खाना लेना तो दुर उसे देख भी नही पा रहा था।

दूसरा – अपनी प्लेट में चावाल की लश्तरी झाड़ लाया था।
इससे कही जादा तो अपना कुर्ता फाड़ लिया था।

तीसरी – एक महिला थी जो ताड़ वृक्ष की तरह तनी थी।
उसकी आधी साडी तो पनीर सब्जी में सनी थी।
वह उसे बार-बार धो रही थी, क्योंकी साडी पडोसन
की पहनकर आयी थी, इसलिए रो रही थी।

चौथा - बेचारा गरीब था, लाचार था।
इसलिए कपड़े उतारकर पहले से ही तैयार था।

पांचवा - अकेलेही सारे झटके झेल रहा था।
भीड में घुसने से पहले डंड पेल रहा था।

छटा – कल्पना में ही खाना खा रहा था।
प्लेट दूसरे की देख रहा था और मुंह अपना चला रहा था।

सातवॉ – उसका तो मालिक ही रब था।
प्लेट तो उसके हाथ में था मगर हलवा गायब था।

आठवॉ – इन सभी के हरकतों से बहुत जादा परेशान था।
इसलिए उसका बीवी बच्चों से जादा अपने प्लेट पर ही ध्यान था।

नववॉ – अजीब सी हरकते कर रहा था।
खाना खाने की बजाय अपने जेबों में भर रहा था।

दसवॉ – स्वयं लडकीवाला था, जिसमें प्राण कंठ में अडे थे।
बाराती तो सारे झुम रहे थे और बाराती बेचारे सड़कों पर खड़े थे।
अंत में देखते हुए ये हालात हमने पत्नी से कहा,
इधर लौट चलो घर 'सही सलामत' ।
सुनते ही वह बिगड़ गई और बोली पता नही किस
बेवखुब के पल्ले पड़ गई।
इससे अच्छा तो किसी पहलवान से शादी रचाती तो
कम से कम भुखों तो नहीं मारी जाती .....
पर उससे शादी रचा के आज तक मन को कचोट ती रही हूं।
जिंदगी में पहली बार किसी दावत से बिना कुछ खाये लौट रही हूं .....

एस.एल. कांबले
मुख्य कार्यालय अधीक्षक (निपटारा)
सोलापुर

सोलापुर मंडल का इतिहास

रेल प्रणाली के तौर पर जीआईपी रेलवे के हिस्से के रूप में सोलापुर मंडल रायचुर से पुणे/मनमाड तक मेन लाइन से जुड़ा 140 वर्ष पुराना मंडल है।क्षेत्रीय रेलों की स्थापना के पश्चात यह मंडल 1966 से 1977 के बीच दक्षिण मध्य रेलवे का हिस्सा था।कुछ मार्ग छोड़कर और कुछ मार्ग प्राप्त करने के बाद यह फिर से मध्य रेलवे का हिस्सा बन गया। मूलत: इस मंडल पर मुख्य मार्ग पर बड़ी लाइन के अलावा बीजापुर की ओर मीटर लाइन की छोटी शाखा थी, जो अब बड़ी लाइन है।साथ ही मिरज से लातूर को जोड़ने वाली 370 कि मी लम्बी छोटी लाइन भी इस मंडल पर थी।बारसी लाइट रेलवे (बीएलआर) का छोटी लाइन वाला यह लम्बा मार्ग पूरी तरह बड़ी लाइन में परिवर्तित हो जाने से अब छोटी लाइन इतिहास का हिस्सा बन चुकी है।

पूरे मंडल पर खपरैल की ऊंची छतों की कई इमारतें हैं, जो इनके रख-रखाव के लिए एक प्रकार की चुनौती है। परंतु दिखने में ये इमारतें आकर्षक और ऊंची ढाल वाली सिलिंग छत के कारण सुविधाजनक भी हैं।खपरैल की छत और कार्यालयों की कतार की दोनों तरफ विशाल बरामदा और बीच में हरियाली सहित ' ई ' आकार की मंडल कार्यालय की इमारत निश्चित रुप से बेमिसाल वास्तु है। संपूर्ण भारतीय रेल पर मंडल कार्यालय की इस प्रकार की यह एकमात्र अनोखी इमारत हो सकती है।उसी प्रकार मंडल रेल प्रबंधक निवास की इमारत भी पूरे सोलापुर शहर में ऐतिहासिक इमारत है।

सोलापुर शहर 16 (सोला) गांवों के समूह से बना हुआ है और इतिहास में उसका बड़ा महत्व है। डॉ.द्वारकानाथ कोटणीस सोलापुर के गौरवान्वित पुत्र हैं, जिन्हें वर्ष 1938 में चीन-जापान युध्द के दौरान घायल चीनी सैनिकों का ईलाज करने के लिए चुनकर चीन भेजा गया था। डॉ. द्वारकानाथ कोटणीस ने चीन में केवल 32 वर्ष की युवा अवस्था में निधन होने तक 4 वर्ष स्वैच्छिक सेवा दी। उनकी इन सेवाओं को चीन सरकार द्वारा आज भी दृढ़ता से याद किया जा रहा है।

वर्ष 1930 में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए "नमक सत्याग्रह" के दौरान सोलापुर शहर ने मई 1930 में 3 दिन के लिए ब्रिटिश शासन से अक्षरश: स्वतंत्रता की घोषणा की गई, तब सभी सरकारी पदाधिकारियों और पुलिस को शहर से बाहर रहने पर मजबूर होना पड़ा था। ब्रिटिश शासन को फिर से बहाल करने के लिए ब्रिटिश सेना के सोलापुर में दाखिल होने तक 3 दिन म्युनिसिपल भवन पर तिरंगा झंडा फहरता रहा। इस अभूतपूर्व आंदोलन के लिए 04 स्वतंत्रता सेनानियों यथा;मल्लप्पा धनशेट्टी, जगन्नाथ शिंदे, कुर्बान हुसैन और किसन सारडा को हिरासत में लिया गया और सैनिक न्यायालय में मुकदमा चलाकर जनवरी 1931 में उन्हें फांसी पर लटकाया गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इन सभी चार शहीदों ने अपनी अमिट छाप छोड़ दी।

सोलापुर मंडल में दक्षिणी महाराष्ट्र क्षेत्र और कर्नाटक का कलबुरगि जिला शामिल है। मुंबई तथा चेन्नै के बीच मुख्य लाइन का हिस्सा है। सोलापुर मंडल इस क्षेत्र के विकास के लिए एक नये पर्व में प्रवेश करने जा रहा है। अगले ३ वर्ष में इस क्षेत्र में विकास और समृध्दि लाने के लिए चलाई जा रही परियोजनाएं इस क्षेत्र के कायाकल्प की शुरुआत साबित होगी|

संकलन राजभाषा विभाग

जिस प्रकार बंगाल भाषा के द्वारा बंगाल में एकता का पौधा प्रफुल्लित हुआ है उसी प्रकार हिन्दी भाषा के साधारण भाषा होने से समस्त भारतवासियों में एकता तरु की कलियाँ अवश्य ही खिलेंगी।

- शारदाचरण मित्र

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

सा. का. नि. 1052 – राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात

1. संक्षिप्त नाम विस्तार और प्रारम्भ –
   (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम 1976 है।
   (2) इनका विस्तार तमिलनाडु राज्य के सिवाय संपूर्ण भारत पर है।
   (3) ये राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
2. परिभाषाएं –इन नियमों में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो :-
   क) "अधिनियम" से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है।
   ख) "केंद्रीय सरकार के कार्यालय" के अंतर्गत निम्नलिखित भी हैं, अर्थात –
      i) केंद्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय,
      ii) केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय और
      iii) केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कंपनी का कोई कार्यालय,
   ग) "कर्मचारी" से केंद्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है,
   घ) "अधिसूचित कार्यालय" से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय अभिप्रेत है।
   ङ) "हिंदी में प्रवीणता" से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है,
   च) क्षेत्र "क" से बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा दिल्ली एवं अंडमान निकोबार द्वीप संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं,
   छ) "ख" क्षेत्र से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंदीगड़ संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है,
   ज) क्षेत्र "ग" से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है,
   झ) "हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान"से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।
3. राज्यों आदि तथा केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि –
   1) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र "क" में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति के पत्रादि, असाधारण दशाओं को छोड़ कर हिंदी में होंगे और उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते है तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवादक भी भेजा जाएगा।
   2) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से –
      क) क्षेत्र "ख" में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र का या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति के पत्रादि मामूली तौर पर हिंदी में होंगे और यदि इनमें से किसी को पत्रादि अंग्रेजी में भेजे

जाते है तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्य क्षेत्र की सरकार द्धारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिंदी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे।

ख) क्षेत्र "ख" के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र "ग" में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4) केंद्रीय सरकार के कार्यालयां के बीच पत्रादि-

क) केंद्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते है।

ख) केंद्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र "क" में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केंद्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित अनुषंगिक बातों को अब ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करें।

ग) क्षेत्र "क" में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच, जो खंड (क) या खंड (ख) विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न है, पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते है।

घ) क्षेत्र "क" में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र "ख"या क्षेत्र "ग"में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते है।

ङ) क्षेत्र "ख" या क्षेत्र "ग" में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते है। परन्तु जहां ऐसे पत्रादि –

i) क्षेत्र "क" या क्षेत्र "ख" के किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, यदि आवश्यक हो तो उनका दूसरी भाषा में अनुवाद पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा।

ii) क्षेत्र ग"में किसी कार्यालय को संबोधित है, वहां उनका दूसरी भाषा में अनुवाद उनके साथ भेजा जाएगा। परन्तु यह और कि यदि पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5) हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर –नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

6) हिंदी और अंग्रेजी दोनो के प्रयोग – अधिनियम की धारा 3 के उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनो का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावोजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनो में तैयार किए जाते है, निष्पादित किये जाते है और जारी किये जाते है।

7) आवेदन, अभ्यावेन आदि –

i) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

ii) जब उपनियम (1) में निर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावदेन हिंदी में किया गया हो, उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

iii) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अंतर्गत अनुशासनिक कार्रवाइयां भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलंब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणी का लिखा जाना -

i) कोई कर्मचारी किसी फाइपर टिप्पणी या मसौदा हिंदी या अंग्रेजी में लिखता है तो उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।

ii) केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है तो उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।

iii) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नही तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उका विनिश्चय करेगा।

iv) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केंद्रीय सरकार आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विर्निदिष्ट कर सकती है, जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता है, टिप्पण, प्रारुपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

9) हिंदी में प्रवीणता –

क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई भी परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या

ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रुप में लिया था, या

ग) यदि वह इन नियमों से उपाबध्द प्रारुप में यह घोषण करता है कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10) हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान -

1) क) यदि किसी कर्मचारी ने –

i) मैट्रिक या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी के साथ उत्तीर्ण कर ली है,

या

i) केंद्रीय सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या, जब उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध मे उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विर्निदिष्ट है, जब वह परीक्षा उत्तीण कर ली है, या

ii) केंद्रीय सरकार द्वारा उस निम्नतर विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या

ख) यदि वह इन नियमों से उपाबध्द प्रारुप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(2) यदि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यता यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(3) केंद्रीय सरकार या केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

(4) केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे। परन्तु यदि केंद्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से, उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है तो यह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

11) मैनुअल, सहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य लेखन सामगी आदि -

1) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी द्विभाषी रप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारुप और शीर्ष हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

3) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएगी मुद्रित या उत्कीर्ण होगी:

परन्तु यदि केंद्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह साधारण के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्ही उपबंधों से छूट दे सकती है।

12) अनुपालन का उत्तरदायित्व –

1) केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह –

i) यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों का समुचित रुप से अनुपालन हो रहा हैं, और

ii) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावशाली जांच के उपय करें।

2) केंद्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों का समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

***

संकलन राजभाषा विभाग

आंखे भर आयीं

आंखे भर आयी है
दामन दे दे थोडा
कबसे प्यासा हूं मै
होंठों की प्यास बुझा,

आहत हुआ मैं आज
पतझर सी छायी है
घर आंगन में अपने
बसंत सरसा थोडा

तूम दूर हो गयी हो प्रिय
तबसे मै जल रहा
बीता सो बीत गया
नजारा दिखा दे थोडा.

अंधियारे की लपट में
क्यों जीना फंस गया मेरा
भोर प्रभाती गाकर
जी बहला दे थोडा.

मैं हूं यहां शून्य–सा
जीना मेरा मरण-सा
प्राणों के मंदिर में अपने
मंत्र घुमा दे थोडा.

जे. एन. दीक्षित
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
राजभाषा विभाग, सोलापुर

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।

- श्यामसुंदर दास

राजभाषा प्रश्नोंत्तरी

1. "क" क्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से है ?

उत्तर– बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, उत्तरांचल और छत्तीसगढ़, राज्य तथा दिल्ली और अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

2. "ख" क्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से है ?

उत्तर– गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंदीगढ़, दमन व दीव और दादर व नगर हवेली संबंधी राज्य क्षेत्र।

3. "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से है ?

उत्तर– असम, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, केरल, कर्नाटक, गोवा, जम्मू व काश्मीर, तमिलनाडु, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम और त्रिपुरा राज्य तथा लक्षद्वीप और पॉंडेचेरी संघ राज्य क्षेत्र।

4. राजभाषा अधिनियम 1963 को धारा 3(3) कब प्रवृत्त हुई ?

उत्तर - 26 जनवरी, 1965

5. संघ की राजभाषा से संबंधित अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 का उल्लेख संविधान के किस भाग में है ?

उत्तर - भाग 17 में।

6. किन-किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा के रुप में घोषित किया गया है ?

उत्तर - आंध्र प्रदेश व बिहार।

7. राजभाषा नियम कब पारित हुआ।

उत्तर - वर्ष 1976 में।

8. 1955 में गठित राजभाषा आयोग का नाम क्या था?

उत्तर - खेर आयोग।

9. वर्ष 1973 में पहली बार गठित रेल हिंदी सलाहकार समिति के अध्यक्षा कौन थे ?

उत्तर - स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र

10. रेलवे बोर्ड में पहली बार हिंदी सहायक के एक पद का सृजन कब हुआ था तथा किस शाखा के लिए हुआ था ?

उत्तर - वर्ष 1952 में रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा के लिए।

11. रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी-उप समिति करती है?

उत्तर - संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति।

12. संसदीय राजभाषा समिति में राजभाषा के कितने सदस्य है।

उत्तर - 10.

13. संसदीय राजभाषा समिति की कितनी उप समितियॉं हैं ?

उत्तर - 03 उप समितियॉं।

14. संसदीय राजभाषा समिति का मुख्य कार्य क्या है ?

उत्तर - हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा करना।

15. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते है ?

उत्तर - नगर स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी।

16. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है ?

उत्तर - तीन महीने में एक बार।

17. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है ?

उत्तर - छः महीने में एक बार।

18. राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है ?

उत्तर - राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय।

19. हिंदी पाठयक्रमों में प्रशिक्षण के लिए केन्द्र सरकार के कर्मचारियों को कौन-सी प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध है ?

उत्तर - नियमित, गहन, पत्राचार और प्राइवेट।

20. नियमित हिंदी भाषा पाठयक्रमों का सत्र किस-किस महीने में आरंभ होता है ?

उत्तर - जनवरी और जुलाई में।

21. मातृभाषा के आधार पर केन्द्रीय कर्मचारियों को कितनी कोटियों में वर्गीकृत किया गया है?

उत्तर - कोटि "क", "ख", "ग" और "घ"।

22. वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कब हुई ?

उत्तर - 01 अक्टूबर 1961

23. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कौन-कौन से दस्तावेज है ?

उत्तर - संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संविदा, करार, लाइसेंस, परमिट, निविदा सूचना, निविदा फार्म, संसदके किसी सदन या सदनों में रखे जाने वाले प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट तथा सरकारी कागज-पत्र।

24. राजभाषा नियम, 1976 के किस नियम के अंतर्गत कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है?

उत्तर - नियम 7 के उपनियम (1) के अंतर्गत।

25. हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी की परिभाषा किस नियम के अंतर्गत दी गयी है ?

उत्तर - राजभाषा नियम, 1976 के नियम 9 के अंतर्गत।

26. इस बात का निर्धारण कैसे किया जाएगा कि किसी कार्यालय के कर्मचारियों को कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है ?

उत्तर - यदि किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के बारे में यह समझा जाएगा कि वहाँ के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

27. हिंदी पुस्तकों की खरीद के लिए वार्षिक बजट व्यवस्था के अंतर्गत निर्धारित दर क्या है ?

उत्तर - प्रति कर्मचारी 10/- रु. (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सहित)

28. किसी कार्यालय में नया हिंदी पुस्तकालय खोलने का आधार क्या है ?

उत्तर - कर्मचारियों की संख्या 300 या इससे अधिक होनी चाहिए।

29. रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते है ?

उत्तर - अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड।

30. रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव कौन होते है ?

उत्तर - निदेशक, (राजभाषा)।

******

राजभाषा नियम,1976 के नियम 2 (च) के अंतर्गत

भारत को निम्नानुसार 3 क्षेत्रों में वर्गीकरण किया गया है-

क क्षेत्र	बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह
ख क्षेत्र	गुजरात,महाराष्ट्र,पंजाब,चंडीगढ़,दमन-दीव ,दादरा नगर हवेली संघ राज्य-क्षेत्र
ग क्षेत्र	ऊपर क और ख में दर्शाए गए राज्यों को छोड़ कर अन्य सभी राज्य और संघ राज्य-क्षेत्र

*****

आठवीं अनुसूची (22 भाषाएं)

1. असमिया	5. काश्मीरी	9. पंजाबी	13. संस्कृत	17. नेपाली	21. मैथिली
2. उड़िया	6. गुजराती	10. बंगला	14.सिंधी	18. कोंकनी	22. संथाली
3. उर्दू	7. तमिल	11. मराठी	15. हिंदी	19. बोडो	
4. कन्नड़	8.तेलुगू	12. मलयालम	16. मणिपुरी	20. डोंगरी	

(** उल्लेखनीय है कि हिंदी का प्रयोग राजभाषा के अलावा 8वीं अनुसूची में भी किया गया है)

*****

राजभाषा सप्ताह 2019 की झलकियां